সিংহ লগ্নফল

अनुक्रमणिका

1.	पुस्तक परिचय	7
2.	लेखक परिचय	11
3.	ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व	12
4.	लग्न प्रशंसा	19
5.	जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं	20
6.	लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व	22
7.	लग्न का महत्व	27
8.	सिंहलग्न की ज्योतिषीय विश्लेषण	28
9.	सिंहलग्न एक परिचय	31
10.	सिंहलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में	33
11.	सिंहलग्न के स्वामी सूर्य का वैदिक स्वरूप	35
12.	सूर्य का पौराणिक स्वरूप	38
13.	सूर्य का खगोलीय स्वरूप	47
14.	सिंहलग्न की चारित्रिक विशेषताएं	49
15.	नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी	58
16.	नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल	62
17.	सिंहलग्न पर अंशात्मक फलादेश	64
18.	सिंहलग्न और आयुष्य योग	84
19.	सिंहलग्न और रोग	88
20.	सिंहलग्न और धनयोग	91
21.	सिंहलग्न और विवाहयोग	96
22.	सिंहलग्न एवं संतानयोग	98
23.	सिंहलग्न और राजयोग	101
24.	सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति	104
25.	सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति	121

26. सिंहलग्न में मंगल की स्थिति 138
27. सिंहलग्न में बुध की स्थिति 154
28. सिंहलग्न में गुरु की स्थिति 169
29. सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति 185
30. सिंहलग्न में शनि की स्थिति 198
31. सिंहलग्न में राहु की स्थिति 212
32. सिंहलग्न में केतु की स्थिति 225
33. अथ सूर्य मंत्र 235
34. रविवार व्रत कथा 244
35. सिंहलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन 246
36. दृष्टांत कुण्डलियां 248

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ "कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवें, फाल्गुण पौर्णमास में

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तः श्रोत्रमुच्यते।।- पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्--फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागाना मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक "ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वाग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1

दीक्षित होवें[1] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहते हैं कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोने चाहिए? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल -मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।
यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[2]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने

1. एकाष्टकामां दीक्षंरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षंरन्-तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1
2. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
3. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
4. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)

ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[1]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[2]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[3]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया।[4] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[5]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवत: ईसापूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[7] वस्तुत:

---

1. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550
2. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
3. वाचस्पत्यम भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
5. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पु. 90
6. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽ पठ्यते ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते।।- पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada. POONA CITY, page-3

फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद याज्ञान्**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रर्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञान तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ।
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप-चन्द्रशेखरन (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहाय: पुरुषाणामापदर्णवे पोत:।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपर:॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अत: जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी का अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुत: सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ट 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/24
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभ:।
   तथा सांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो बरसात तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने से हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मसजिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मसजिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराह मिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से भी नहीं रोकता, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

मेरे निजी शब्दों में **'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'**

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

□□□

1. वक्री ग्रह (प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमय: सिंहो यथा चित्रमयो नृप:।
   तथा वेदावधीतोपिज्योतिषशास्त्रं बिना द्विजा:।।–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देव: प्रभु: स्वामी लग्नं ज्योति: परं मतम्।
लग्नं दीपा महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरु:॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपा:॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दु: सर्वत्र बीजाम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावा: स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर **लावणी** में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
जिसका जन्म हो **मेषलग्न** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता वृषभ लग्न।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुंसक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendant) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख है। ज्योतिष की भाषा में एक ''समय'' विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि ''लग्न'' का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

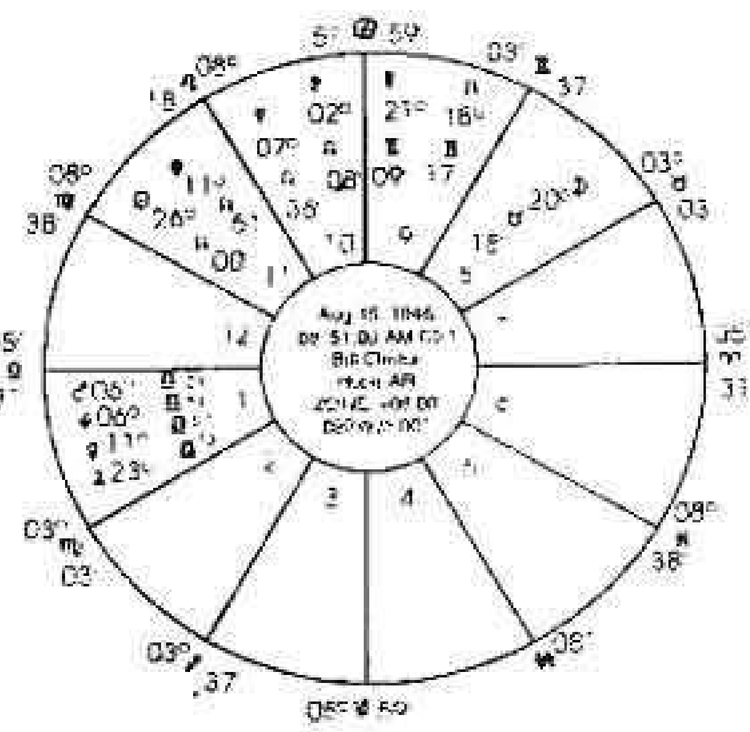

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों मे Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुत: आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह

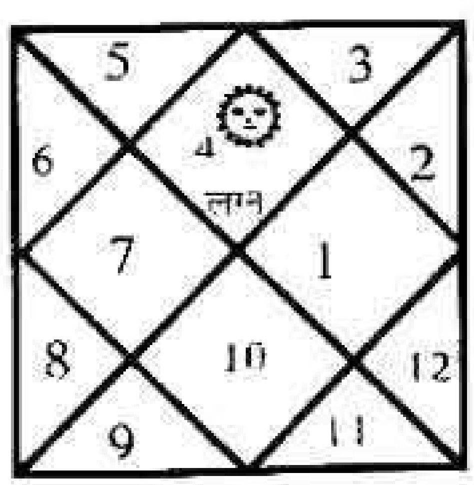

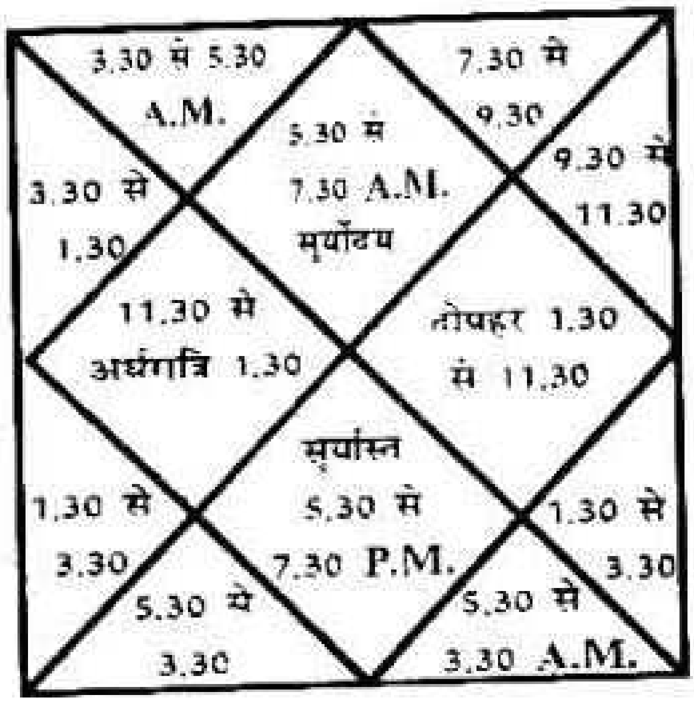

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली के अनुसार सीधे पूर्व की ओर है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

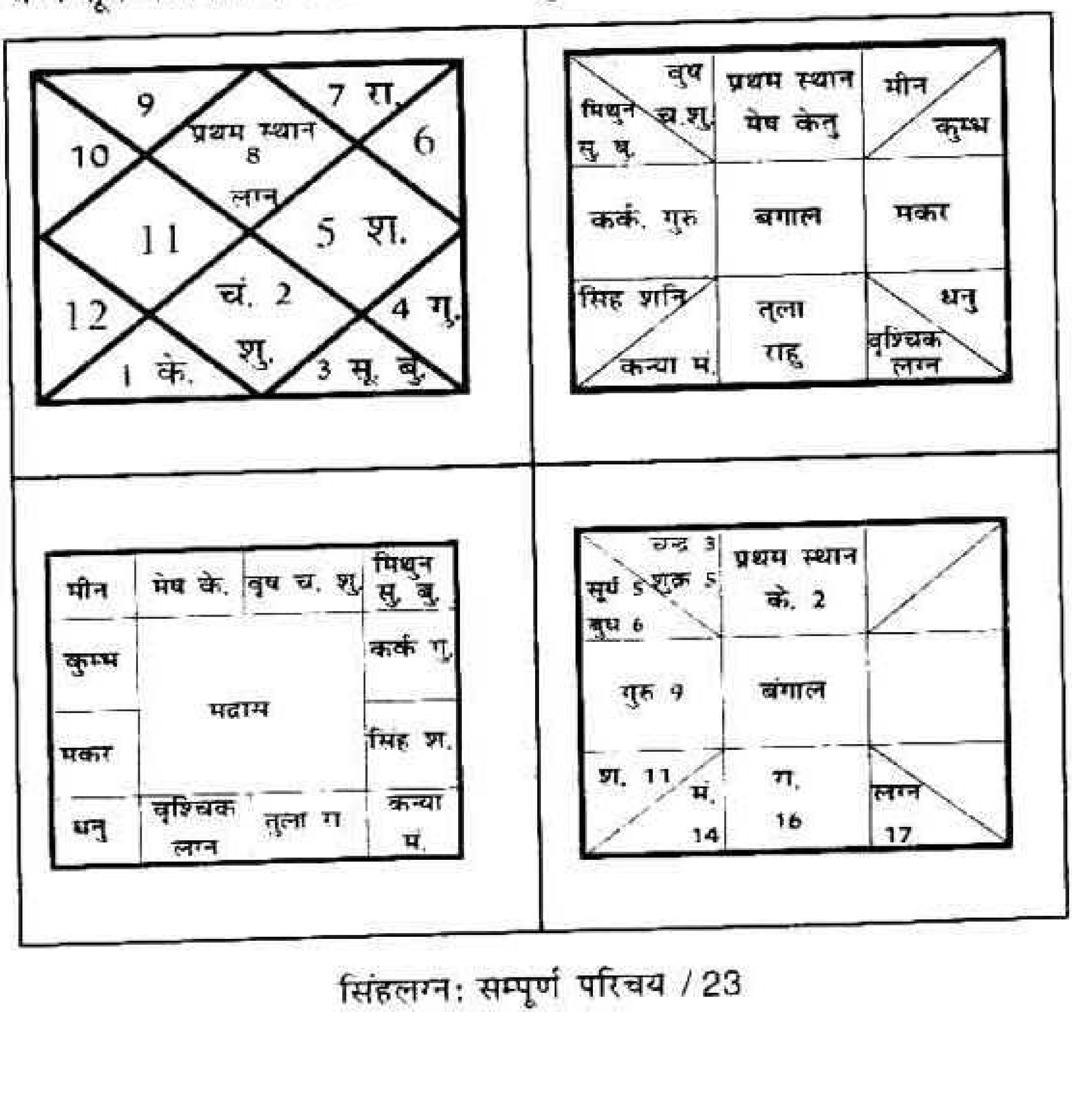

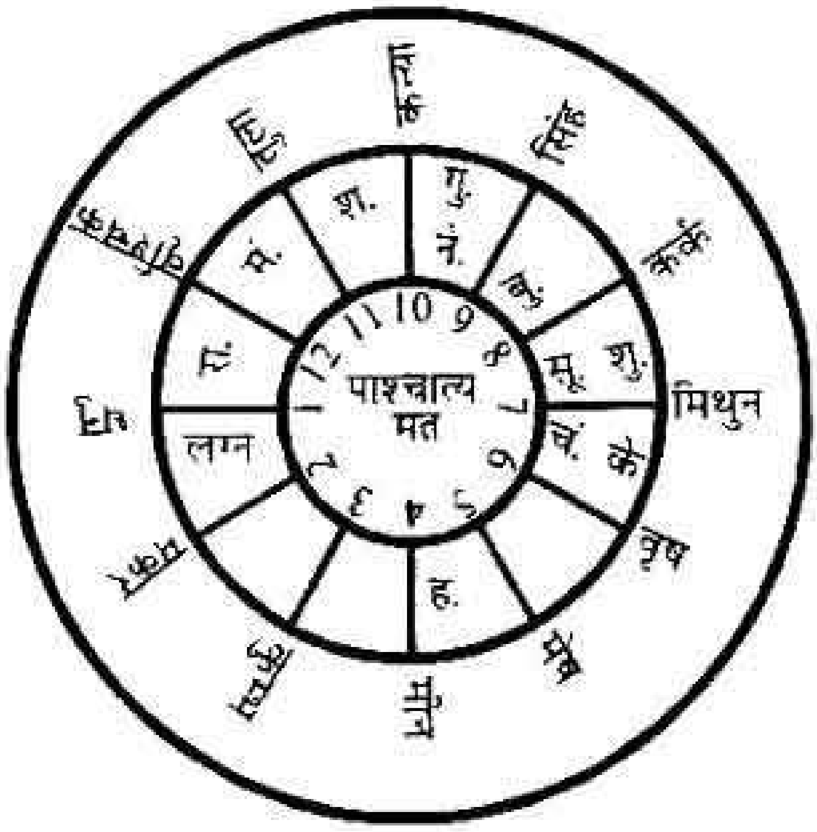

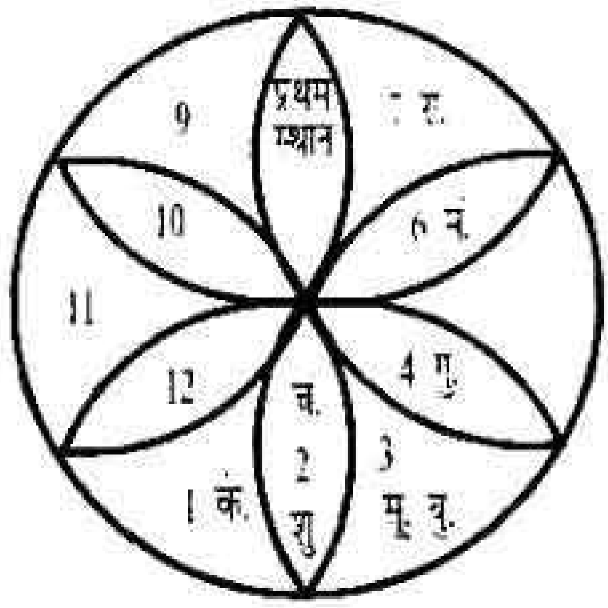

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	. 5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। **1. जन्म तारीख 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनूत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि– **"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा. यह निश्चित

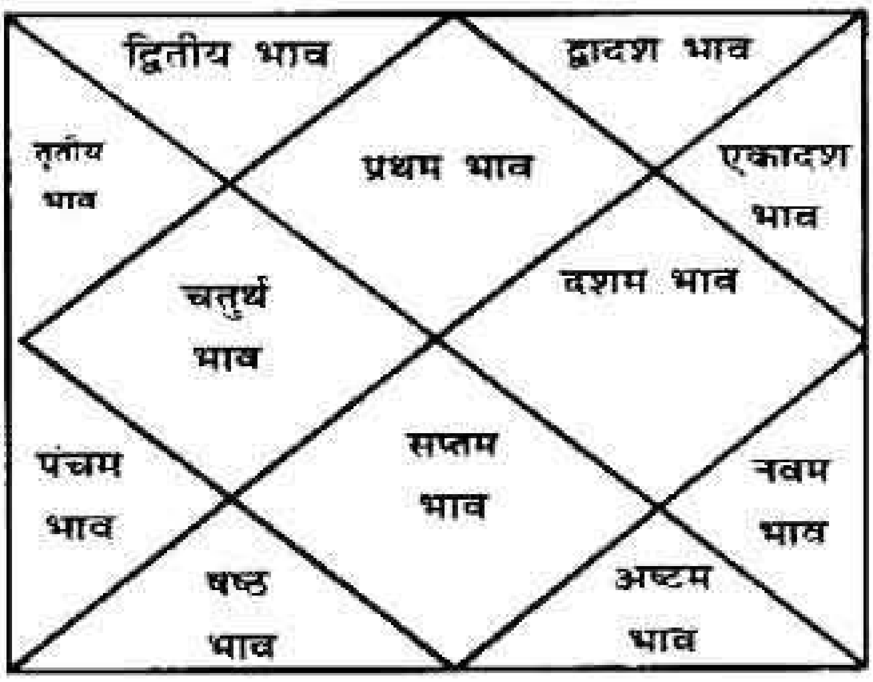

है। अत: अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जायेगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता हैं। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

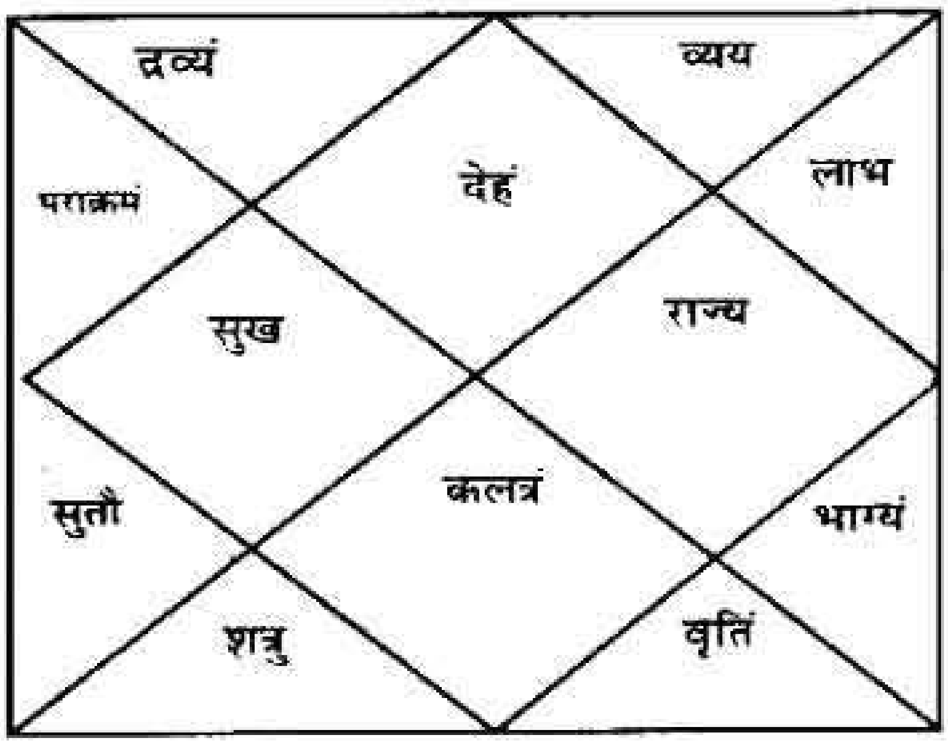

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनमत्र मिथ्या।।
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्य विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

'ज्योतिर्विदभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

सिंहलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

रोहिणेय सितौ पापौ कुजजीवौ शुभावहौ।
प्रभवेद्योगं मात्रेण न शुभं कुजशुक्रयो:।।17।।
(गुरु शुक्रयो:)
वन्ति सौम्यादव: पापा मारकत्वेन लक्षित:।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहजस्य मनीविभि:।।18।।

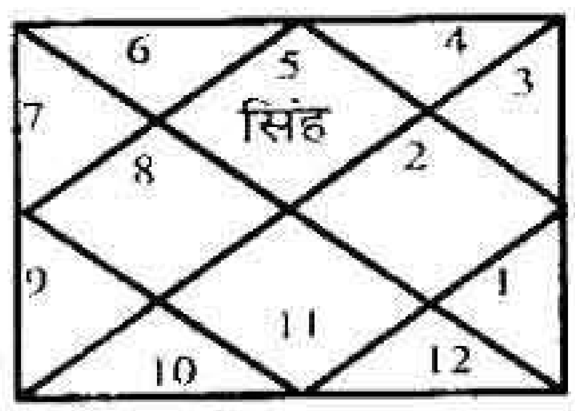

दूसरा पाठ

मन्दसौम्यसिता पापा: कुज एवं शुभावह:।
प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं गुरुशुक्रयो:।।12।।
गुरु युक्ता यदा भौमा विशेषफलदायक:।
(बुध:) मंद: साक्षान्न हस्तास्थान् मारकत्वेन लक्षित:।।20।।
वन्ति सौभ्यादय: पापा मारकत्वेन लक्षित:।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहजस्य मनीषिभि:।।21।।

पहला पाठ

बुध और शुक्र ये पाप फल उत्पन्न करने वाले हैं, जिसका कारण बुध एकादश स्थान का और द्वितीय स्थान का स्वामी होता है। मंगल केन्द्र और त्रिकोण का अधिपति होने से शुभ फलदायक है। शुक्र मंगल का योग शुभ नहीं होता। गुरु मंगल का योग विशेष शुभ फलदायक है। बुधादि उपरोक्त पाप फलदायक ग्रह अपनी दशान्तर्दशाओं में मनुष्य को मारते (मृत्यु देते) हैं।

द्वितीय पाठ

सिंहलग्न हो तो शनि, बुध, शुक्र अशुभ फल देते हैं। अकेला मंगल मात्र शुभ फल देता है। गुरु शुक्र का केवल योग शुभ फलदायक नहीं होता। गुरु मंगल योग यदि हो तो विशेष फलदायक होता है। बुध मारक लक्षणों से युक्त हो तो भी स्वय मारक नहीं होता। कुछ स्थानों में बुध की जगह मंद यानि शनि ऐसा पाठ है। मारक लक्षणों से युक्त ऐसे बुधादि ग्रह मारक होते हैं। सिंहलग्न में जन्म हो तो ज्ञाताओं को इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिये।

स्पष्टीकरण–वास्तविक कर्क और सिंहलग्न में शुभाशुभ ग्रह एक ही हैं। परन्तु पहले पाठ में शुक्र यदि मंगल से युति करे तो शुभ फल नहीं देते ऐसा कहा है यह बराबर है, कारण चतुर्थेश एवं भाग्येश मंगल को त्रिषडायपति (और दशमेश) शुक्र मिलता है। वैसे ही शुक्र दशम स्थान (केंद्र का) का अधिपति है। "केन्द्राधिपत्य दोषस्तु बलवान गुरु शुक्रयो" इस नियम के अनुसार शुक्र को दुय्यम (डबल) अशुभत्व का अधिकार प्राप्त हुआ। इसके अलावा शुक्र मंगल का शत्रु है। "भावार्थरत्नाकर" ग्रंथ में श्री रामानुजाचार्य ने कहा है कि सिंहलग्न को शुक्र और मंगल के दशमेश-नवमेश होने पर भी इनका योग राजयोग के फल नहीं देते। पहले पाठ में शनि का विचार ही नहीं किया गया है और दूसरे पाठ में कुछ प्रतियों में बुध मारक लक्षणों से युक्त होने पर भी स्वयं मारक नहीं होता। वास्तविक बुध एकादश और द्वितीय स्थान का अधिपति है और शनि षष्ठ और सप्तम स्थानों का स्वामी है। द्वितीय और सप्तम ये मारक स्थान है। उसी प्रकार षष्ठ और एकादश ये त्रिषडाय स्थान हैं। रवि और चंद्रमा को विवेचन में पूर्णत: स्थान नहीं है। मंगल भाग्याधिपति और चतुर्थाधिपति होने से श्लोक 11 के अनुसार अकेला राजयोग करने में समर्थ है। गुरु शुक्र का योग शुभ फलदायक नहीं होता कारण शुक्र तृतीयाधिपति और दशमाधिपति और गुरु पंचमाधिपति और अष्टमाधिपति होने के कारण से और कोई भी ग्रह अष्टमेश से युक्त हो तो वह दोषी होता है, ऐसा ग्रंथ में कहा गया होने से यह योग दोषकारक माना गया है। सूर्य लग्नेश है और वह लग्न (केन्द्र-त्रिकोण) का स्वामी होकर शुभ फल देने वाला है। चंद्रमा व्ययेश और अशुभ फल देने वाला होता है इसलिये उसका विवेचन नहीं किया गया है। परन्तु श्लोक 8 अनुसार सूर्य और चंद्रमा क्रमश: कर्क और सिंहलग्न के लिए द्वितीयेश द्वादशेश होते हैं परंतु दोनों ग्रह को एक ही राशि में उन्हें सम माना गया है और वे जिन स्थानों में स्थित हों उन स्थानों के अनुरोध से फल करते हैं अर्थात् उन स्थानों के अनुसार शुभाशुभ फल देते हैं।

सिंहलग्न के लिए शुभाशुभ योग–

1. **शुभ योग–** मंगल निसर्गत: पाप ग्रह होने पर भी नवम (त्रिकोण) का अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ माना गया है। वह चतुर्थ स्थान का (केन्द्र स्थान का) स्वामी भी है। इसलिए श्लोक 7 के अनुसार शुभ होने से शुभ फल देने वाला है।
2. **शुभ योग–** मंगल तथा गुरु चतुर्थ और पंचम स्थानों के अधिपति हैं। गुरु अष्टम स्थान का स्वामी भी हैं। यहां गुरु पंचम और अष्टम स्थान का अधिपति है और उसको नवम स्थान के अधिपति से साहचर्य योग के कारण शुभ माना गया है और वह शुभ फल देने वाला है।
3. **शुभ योग–** सूर्य लग्न का अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला है।

सिंहलग्न के लिए अशुभ योग–

1. **अशुभ योग–** बुध द्वितीय (मारक) स्थान का स्वामी होकर एकादश स्थान का स्वामी भी है। श्लोक 6 के अनुसार वह अशुभ होने से अशुभ फल देने वाला है।
2. **अशुभ योग–** शुक्र तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ गिना गया है और दशम केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार दूषित है। इसलिए वह अशुभ फल देने वाला है।
3. **अशुभ योग–** (पाठान्तर के अनुसार) शनि षष्ट स्थान का स्वामी होने से अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला है।

निष्फल योग– 1. मंगल+शनि, 2. गुरु+शुक्र, 3. गुरु+शनि (दोनों ही दूषित होते हैं।

सफल योग– 1. सूर्य+मंगल, 2. सूर्य+गुरु (सदोष), 3. मंगल+गुरु (सदोष), 4. मंगल+शुक्र (सदोष), 5. मंगल अकेला शुभ फलदायक है कारण वह नवम और चुतर्थ स्थन (त्रिकोण-केन्द्र) का स्वामी है।

❑❑❑

सिंहलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश	-	सूर्य
2.	पराक्रमेश, राज्येश	-	शुक्र
3.	सुखेश, भाग्येश	-	मंगल
4.	पंचमेश, अष्टमेश	-	गुरु
5.	षष्ठमेश, सप्तमेश	-	शनि
6.	खर्चेश	-	चंद्र
7.	धनेश, लाभेश	-	बुध
8.	त्रिकोणाधिपति	-	5-गुरु, 9-मंगल
9.	दु:स्थान के स्वामी	-	6-शनि, 8-गुरु, 12-चंद्र
10.	केन्द्राधिपति	-	1-सूर्य, 4-मंगल, 7-शनि, 10-शुक्र
11.	पणकर के स्वामी	-	2-बुध, 5, 8-गुरु, 11-बुध
12.	आपोक्लिम	-	3-शुक्र, 6-शनि, 9-मंगल, 12-चंद्र
13	त्रिकेश	-	6-शनि, 8-गुरु, 12-चंद्र
14.	उपचय के स्वामी	-	3-शुक्र, 6-शनि, 10-शुक्र, 11-बुध
15.	शुभ योग	-	1. मंगल, 2. मंगल, 3. सूर्य, 4. गुरु
16.	अशुभ योग	-	1. बुध, 2. शुक्र, 3. शनि
17.	निष्फल योग	-	1. मंगल+शनि, 2. गुरु+शुक्र, 3. गुरु+शनि
18.	सफल योग	-	1. सूर्य+मंगल, 2. सूर्य+गुरु (सदोष) 3. मंगल+गुरु (सदोष), 4. मंगल+शुक्र (सदोष) 5. मंगल अकेला
19.	राजयोगकारक	-	मंगल व गुरु

20. **मारकेश** – शनि

21. **पापफलद** – गुरु, शनि और शुक्र

विशेष– सिंहलग्न में भी कर्कलग्न की तरह मंगल पूर्ण योगकारक है। शनि मारकेश है, परन्तु इस लग्न में चंद्रमा साहचर्य से शुभ व अशुभ दोनों फल देता है।

❑❑❑

सिंहलग्न की प्रमुख विशेषताएं
एक नजर में

1.	लग्न	–	सिंह
2.	लग्न चिह्न	–	शेर
3.	लग्न स्वामी	–	सूर्य
4.	लग्न तत्त्व	–	अग्नि तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	स्थिर
6.	लग्न दिशा	–	पूर्व
7.	लग्न लिंग व गुण	–	पुरुष, सतोगुणी
8.	लग्न जाति	–	क्षत्रिय
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	क्रूर स्वभाव, पित्त प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	हृदय
11.	जींवन रत्न	–	माणिक्य
12.	अनुकूल रंग	–	चमकीला श्वेत व पीला, भगवा
13.	शुभ दिवस	–	रविवार, बुधवार
14.	अनुकूल देवता	–	सूर्य
15.	व्रत, उपवास	–	रविवार
16.	अनुकूल अंक	–	एक
17.	अनुकूल तारीखें	–	1/18/19/28
18.	मित्र लग्न	–	मिथुन, कन्या, मेष व धनु
19.	शत्रु लग्न	–	वृष, तुला, मकर व कुम्भ

20. **व्यक्तित्व**	–	प्रबल पराक्रमी, महत्त्वाकांक्षी, अधिकार प्रियता
21. **सकारात्मक तथ्य**	–	खुले दिल-दिमाग वाला, उदारमना, गर्मजोशी
22. **नकारात्मक तथ्य**	–	घमंडी, अति आत्मविश्वास, अति महत्त्व का प्रदर्शन

❑❑❑

सिंहलग्न के स्वामी सूर्य का वैदिक स्वरूप

ऋग्वेद में एक जगह आश्चर्य के साथ पूछा गया कि सूर्य अपने स्थान पर दृढ़ कैसे है, वह गिर क्यों नहीं जाता?[1] उत्तर है कि सूर्य स्वयं विश्व का विधान का संरक्षक है, उसका चक्र नियमित, अपरिवर्तनीय, सार्वभौम नियम का अनुसरण करता है। विश्व का केन्द्र स्थान है, वह जंगम और स्थावर सभी की आत्मा है। (ऋ. 1/115/1) ज्योतिष में सूर्य को काल की आत्मा माना गया है।

सूर्य, समय निर्माता के रूप में 360 दिन का वर्ष बनाते हैं। जो कि वैदिक जीवन का सामान्य संवत्सर है। यह दिनों (वारों) की गणना और उसका संवर्द्धन भी करता है।

इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः।
सोम राजन् प्रण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि॥

—ऋग्वेद 8/48/7

ऋग्वेद में सूर्य ग्रहण के बारे में अनेक संदर्भ मिलते हैं। यह कहा गया है कि 'स्वर्भानु' ने अंधकार द्वारा सूर्य को ग्रस लिया, अत्रि ने फिर सूर्य को बाहर निकाला[2]। अथर्ववेद में सूर्य ग्रहण के अनेक प्रसंग आते हैं।[3]

ऋग्वेद में सूर्य की पुत्री को 'सूर्या' कहा गया है।[4] उसे प्रजापति और सविता की पुत्री कहा गया है। उसे अश्विनों की पत्नी कहा गया है। किन्तु सोम से भी उसके

---

1. अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्कत्तानोऽव पद्यते न।
   कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् ॥ ऋग्वेद 4/13/5
2. यं वै सूर्य स्वर्भानु स्तमसाविध्यदासुरः।
   अत्रयस्तमन्वविन्दम् नह्य न्ये अशक्नुवन् ॥ ऋग्वेद 5/40/9
3. अ. 19/9/10, 13/2/4, 12/36, शतपथ ब्राह्मण, 4/3/21
4. आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्ष्मेवातिष्ठादर्वता जयन्ती।
   विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे ॥ ऋग्वेद 1/116/17

विवाह का उल्लेख मिलता है।[1] ऋग्वेद के बारह सूक्तों में सूर्य की स्तुति की गई है। इसका देवत्व सबसे अधिक उस समय विकसित होता है जब यह आकाश के मध्य में चढ़ जाता है।[2]

चक्षु और सूर्य का घनिष्ठ संबंध है। यह विराट पुरुष का चक्षु स्थानीय है।[3] एक जगह इसको वरुण का चक्षु भी कहा गया है।[4]

यह सूर्य (आदित्य) छः माह दक्षिणायन रहता है और छः माह उत्तरायण में[5] ऋतुओं का नियमन करके (यह सूर्य) क्रमशः पृथ्वी की पूर्वादि दिशाओं का निर्माण करता है।[6] ऋग्वेद में अलंकारिक भाषा में यह बताया गया है कि सूर्य के रथ में सात घोड़े हैं।[7] वहीं यह भी स्पष्ट कर दिया कि वस्तुतः सूर्य के घोड़े इत्यादि कुछ भी नहीं, वे सूर्य की सात किरणें हैं।[8]

वैदिक काल में सूर्य संक्रान्तियों (बारह राशियों) का स्पष्ट उल्लेख इस प्रकार मिलता है–सत्यभूत (आदित्य) का बारह आरों वाला चक्र भूलोक के चारों ओर सतत भ्रमण करते हुए भी नष्ट नहीं होता।[9]

इस बारह परिधियों (12 सूर्य संक्रान्ति), एक चक्र (वर्ष) और तीन नाभि (तीन ऋतु गर्मी, सर्दी, वर्षा) इन्हें कौन जानता है? उस चक्र (वर्ष) में शंकु की तरह 360 चंचल आरे (दिन) लगाये हुए हैं।[10]

---

1. उर्ध्वांधीतिः प्रत्यस्य प्रयाम न्यधासि शस्मन्त्समयन्त आ दिशः।
स्वदामि धर्म प्रति यन्त्यूतम आ वामूर्जानी रथमश्विनारूहत् ।। ऋग्वेद. 1/119/2
2. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुमित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवीं अंतरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।। ऋग्वेद. 1/115/1
इषिरेण मे मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः
सोम राजन् प्रण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि ।। ऋग्वेद. 4/48/7
3. चक्षोः सूर्यो अजायत–यजुर्वेद–अ. 31/12
4. उदुत्यच्चक्षुर्महि मित्रयोरां एति प्रियं वरुणयोरदब्धम्।
ऋतुस्य शुचि दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदित व्यद्यौत् ।। ऋग्वेद 6/51/1
5. तस्मादादित्यः षण्मासो दक्षिणेनैति षडुत्तरेण ।। तैत्तरीय संहिता. 6/5/3
कालात्म दिनकृन्मनश्य हिमगुः –बृहज्जातक अ. 2/1
6. पूर्वामनु प्रदिशं पार्थिवानामृतून् प्रशासद्विदधावनुष्ठु।। ऋग्वेद संहिता।। 1/95/3
7. अमी ये सप्तरश्मयः ऋग्वेद 1/105/9
8. सूर्यस्य सप्तम रश्मिभिः ऋग्वेद 8/72/16
9. द्वादशारं न हि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिद्यामृतस्य ।। ऋग्वेद 1/164/11
10. द्वादश प्रधश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यग्नि क उ तिच्चकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशाता न न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः ।। ऋग्वेद 1/164/48

वैदिक ऋषियों ने चिंतन करते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में कहा–'वह सूर्य न तो कभी अस्त होता है न उदय होता है। यह जो अस्त होता है, वह (सचमुच) दिन के अंत में जाकर अपने को उलटा घुमाता है। इधर रात करता है और उधर दिन। इस प्रकार जो सवेरे उदित होता है वह (वस्तुत:) सूर्य कभी भी अस्त नहीं होता।'[1]

यह सूर्य अपने प्रकाश से चंद्रमा को तेजस्वी करता है।[2] इतना ही नहीं ऋग्वेद 4/28/23, 5/23/4, 10/138/4, में सूर्य ग्रहण के सिद्धांतों का प्रतिपादन भी मिलता है।

❑❑❑

---

1. स वा एष न कदाचनास्तमेति नोदेति तं यदस्तमेतीति
   मन्यन्तेह्न एव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते रात्रिमेवा
   वस्तात् कुरुतेह: परस्तादथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यते
   रात्रेरेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते हरेवावस्तात्
   कुरुते रात्रिं परस्तात् स वा एष न कदाचन निम्लोचति–ऐतरेय ब्राह्मण 14/6
2. यमादित्या अं (घु) शुभाप्यायन्ति–तैत्तरीय संहिता 2/4/14

सूर्य का पौराणिक स्वरूप

सूर्य देवता का एक नाम 'सविता' भी है, जिसका अर्थ है–सृष्टि करने वाला (सविता सर्वस्य प्रसविता–निरुक्त 10/3')। ऋग्वेद में बताया गया है कि आदित्य-मण्डल के अंत:स्थित सूर्य देवता सबके प्रेरक, अंतर्यामी, परमात्म स्वरूप हैं। ये ही सम्पूर्ण स्थावर और जन्म के कारण हैं (ऋक्. 1/115/1)।

मार्कण्डेय पुराण ने इस तथ्य का उपबृंहण करते हुए कहा है कि सूर्य ब्रह्म स्वरूप हैं। सूर्य से जगत् उत्पन्न होता है और उन्हीं में स्थित है। इस तरह यह जगत् सूर्य-स्वरूप है। सूर्य सर्वभूतस्वरूप सर्वात्मा और सनातन परमात्मा है। (मार्क. पु. 18/12-14)।

वेद ब्रह्म स्वरूप हैं, अत: सूर्य देवता भी वेद स्वरूप हैं। इसलिए इन्हें 'त्रयीतनु' कहा गया है। पुराण ने इसके स्पष्टीकरण में एक इतिहास प्रस्तुत किया है। जब ब्रह्मा अण्ड का भेदन कर उत्पन्न हो गये, तब उनके मुख से 'ॐ' यह महाशब्द उच्चरित हुआ। यह ओंकार परब्रह्म है और यही सूर्य देवता का शरीर है–

आद्यन्तं यत्परं सूक्ष्ममरूपं परमं स्थितम्।
ओमित्युक्तं मया विप्र तत्परं ब्रह्म तद्वपु:॥

(मार्क. 98/27)

इस ओंकार से पहले 'भू:' फिर 'भुव:' और बाद में 'स्व:' उत्पन्न हुआ। ये तीन व्याहृतियां सूर्य के सूक्ष्म स्वरूप हैं। फिर इनसे 'मह:', 'जन:', 'तप:' और 'सत्यम्' उत्पन्न हुए, जो स्थूल से स्थूलतर और स्थूलतम होते चले गये। इस तरह 'ॐ' रूप शब्द ब्रह्म से भगवान् सूर्य का स्वरूप प्रकट हुआ (मार्क. पु. 98/22-24)।

ब्रह्मा के चारों मुखों से चार वेद आविर्भूत हुए, जो तेज से उद्दीप्त हो रहे थे। ओंकार के तेज ने इस चारों को आवृत कर लिया। इस तरह ओंकार के तेज में मिलकर चारों एकीभूत हो गये। यही वैदिक तेजोमय सूर्य देवता हैं। यह सूर्य रूप तेज सृष्टि में सबसे पहले (आदि में) उत्पन्न हुआ। इसलिये इनका नाम 'आदित्य' पड़ा।

इस तरह यह सूर्य विश्व का अव्ययात्मक कारण है (मार्क. पु. 99/1-14)। ऋक्, यजु: और सामनामवाली त्रयी ही प्रात:काल, मध्याह्नकाल और अपराह्णकाल में तपती है (मार्क. पु. 99/15)।

इस प्रकार भगवान सूर्य वेदात्मा, वेदसंस्थित और वेद-विद्यामय हैं।

तदेवं भगवान् भास्वान् वेदात्मा वेदसंस्थित:।

वेदाविद्यात्मकश्चैव पर: पुरुष उच्यते॥

(मार्क. 99/20)

यही भगवान् भास्कर ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र बनकर सृष्टि, स्थिति और संहार करते हैं (मार्क. पु. 99/21)। हम मनुष्य उन्हीं की संतान हैं-

'तस्य वा इयं प्रजा यन्मनुष्या:'

(तै. सं. 6/5/6/9)

अदिति के पुत्र रूप में– सनातन विधान के अनुसार ब्रह्मा ने देवताओं को यज्ञ-भाग का भोक्ता तथा त्रिभुवन का स्वामी बनाया था, किंतु आगे चलकर इनके सौतेल भाई दैत्यों, दानवों एवं राक्षसों ने संगठित होकर देवताओं के विरुद्ध युद्ध ठान लिया। अंत में देवताओं को पराजित करके इनके पदों और अधिकारों को छीन लिया। देवताओं की माता अदिति अपने पुत्रों की दुर्गति देखकर बहुत उद्विग्न हो गयीं। त्राण पाने के लिये वे भगवान् सूर्य की उपासना करने लगीं। निराहार रहती थीं। उनकी तपस्या से भगवान् सूर्य प्रसन्न हो गये। उन्होंने वरदान दिया कि 'अपने सहस्र अंशों के साथ मैं तुम्हारे गर्भ से अवतीर्ण होकर तुम्हारी मन:कामना पूर्ण करूंगा।' भगवान् ने शीघ्र ही अपने वरदान को फलित किया। अपनी क्रूर दृष्टि से देखकर शत्रुओं का विध्वंस कर वेदमार्ग को फिर से स्थापित कर दिया। देवताओं ने अपने-अपने पद और अधिकार प्राप्त कर लिये। भगवान् सूर्य अदिति के पुत्र हुए, इसलिये आदित्य कहे जाने लगे- **'अदितेपरत्यं पुमान् आदित्य:।'** इसी अर्थ में, वेद में आदित्य (ऋ. 1/50/13) तथा आदितेय (ऋ. 10/88/11) शब्द भी आते हैं।

वर्ण– सूर्य देवता का वर्ण लाल है।

वाहन– इनका वाहन रथ है। जिस प्रकार भगवान् सूर्य वेद स्वरूप हैं, उसी प्रकार उनका रथ भी वेद स्वरूप है। इनके रथ में एक ही चक्र है, जो संवत्सर कहलाता है। इस रथ में मास स्वरूप बारह आरे हैं। ऋतु-रूप छ: नेमियां हैं और तीन चौमासे-रूप तीन नाभियां हैं (श्रीमद्भा. 5/21/13)। इस रथ में अरुण नामक सारथि ने गायत्री आदि छन्दों के सात घोड़े जोते-रखे हैं (भा. 5/21/15, ऋक्. 1/115/3)। सारथि का मुख भगवान् सूर्य की ओर रहता है। इसके साथ साठ हजार

बालखिल्य स्वस्तिवाचन और स्तुति करते हुए चलते हैं। ऋषि, गन्धर्व, अप्सरा, नाग, यक्ष, राक्षस और देवता आत्म रूप सूर्य नारायण की उपासना करते हुए चलते हैं।

परिवार– भगवान् सूर्य की दो पत्नियां हैं– संज्ञा और निक्षुभा। संज्ञा के सुरेणु, राज्ञी, द्यौ, त्वाष्ट्री एवं प्रभा आदि अनेक नाम हैं तथा छाया का ही दूसरा नाम निक्षुभा है। संज्ञा विश्वकर्मा त्वष्टा की पुत्री हैं। भगवान् सूर्य को संज्ञा से वैवस्वतमनु, यम, यमुना, अश्विनीकुमारद्वय और रैवन्त तथा छाया से शनि, तपती, विष्टि और सावर्णिमनु–ये दस संतानें प्राप्त हुईं।

शक्तियां– इडा, सुषुम्ना, विश्वार्चि, इन्दु, प्रमर्दिनी, प्रहर्षिणी, महाकाली, कपिला, प्रबोधिनी, नीलाम्बरा, घनान्तःस्था और अमृता–ये भगवान् सूर्य की बारह शक्तियां हैं (अग्नि पु. 51/8-9)।

आयुध– चक्र, शक्ति, पाश, अंकुश सूर्य देवता के प्रधान आयुध हैं (श्रीतत्त्वनिधि)।

सूर्य के अधिदेवता शिव (ईश्वर) हैं और प्रत्यधि देवता अग्नि हैं। सूर्य देवता का ध्यान इस प्रकार करना चाहिये–

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदा रविः॥

(मत्स्यपु. 94/1)

'सूर्य देव की दो भुजाएं हैं, वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं, उनके दोनों हाथों में कमल सुशोभित रहते हैं। उनकी कान्ति कमल के भीतरी भाग की-सी है और वे सात घोड़ों पर सात रस्सियों से जुड़े रथ पर आरूढ़ रहते हैं।

सूर्य का पौराणिक स्वरूप– 'सूर्य देव की दो भुजाएं हैं, वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं। उनके दोनों हाथों में कमल सुशोभित रहते हैं। उनके सिर पर सुंदर स्वर्ण मुकुट तथा गले में रत्नों की माला है। उनकी कान्ति कमल के भीतरी भाग की सी है और वे सात घोड़ों पर सात रस्सियों से जुड़े रथ पर आरूढ़ रहते हैं।

सूर्य देवता का एक नाम 'सविता' भी है, जिसका अर्थ है– सृष्टि करने वाला सविता सर्वस प्रसविता (निरुक्त 10/31)। ऋग्वेद में बताया गया है कि आदित्य-मण्डल के अंतःस्थित सूर्य देवता सबके प्रेरक, अंतर्यामी, परमात्म स्वरूप हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सूर्य ब्रह्मस्वरूप हैं, सूर्य से जगत् उत्पन्न होता है और उन्हीं में स्थित है। सूर्य सर्वभूत स्वरूप परमात्मा हैं। यही भगवान् भास्कर, ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र बनकर जगत् का सृजन पालन और संहार करते हैं। सूर्य नवग्रहों में सर्वप्रमुख देवता है। वेद ब्रह्म स्वरूप हैं, अतः सूर्य देवता भी वेद स्वरूप हैं। इसलिए इन्हें 'त्रयीतनु' कहा गया है।

जब ब्रह्मा अण्ड का भेदन कर उत्पन्न हुए, तब उनके मुख से- ओ३म् यह महाशब्द उच्चरित हुआ। यह ओंकार परब्रह्म है और यही भगवान् सूर्य देव का शरीर है।

आद्यन्तं यत्परं सूक्ष्मरूपं परमं स्थितम्।
ओमित्युक्तं मया विप्रं तत्परं ब्रह्म तद्वपुः॥

इस ओंकार से पहले 'भूः' फिर 'भुवः' और बाद में 'स्वः' उत्पन्न हुआ। ये तीन व्याहृतियां सूर्य के सूक्ष्म स्वरूप हैं। फिर इनसे 'महः', 'जनः', 'तपः' और 'सत्यम्' उत्पन्न हुए, जो स्थूल से स्थूलतर और स्थूलतम होते चले गये। इस तरह ओ३म रूपशब्द ब्रह्म से भगवान् सूर्य प्रकट हुआ।

ब्रह्मा के चारों मुख से चार वेद आविर्भूत हुए, जो तेज से उदीप्त हो रहे थे। ओंकार के तेज ने इन चारों को आवृत कर लिया। इस तरह ओंकार के तेज से मिलकर चारों एकीभूत हो गये। यही वैदिक तेजोमय ओंकार स्वरूप सूर्य देवता हैं। यह सूर्य स्वरूप तेज सृष्टि के सबसे आदि में प्रकट हुआ, इसलिए इसका नाम आदित्य पड़ा।

भगवान् सूर्य सिंह राशि के स्वामी हैं। इनकी महादशा छः वर्ष की होती हैं। इसकी प्रसन्नता के लिए माणिक्य धारण करना चाहिए। तथा गेहूं सवत्सा गाय, गुड़, तांबा, सोना एवं लाल वस्त्र ब्राह्मण को दान करना चाहिए। सूर्य की शांति के लिए वैदिक मंत्र ''ओ३म् आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥'' पौराणिक मंत्र 'जपाकुसुमंकाशं काश्यपेयं माहद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥' बीजमंत्र-'ओ३म् ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः' तथा सामान्य मंत्र 'ओ३म घृणि सूर्याय नमः' हैं। इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार एक निश्चित संख्या में जाप करना चाहिए। जप की कुल संख्या 7000 तथा समय प्रातः काल है।

अस्तता- सूर्य के समीप जितने अंशों से ग्रहों के आने पर ग्रह अस्त हुए समझे जाते हैं वे निम्न हैं। चंद्र 12, मंगल 17, गुरु 11, शुक्र 9, यदि शुक्र है तो 8 अंश, बुध वक्री है तो 12 अंशों तक अस्त होते हैं।

नीचे व स्वगृह होंगे तो उन ग्रहों का फल टूट जायेगा वे अपनी क्षमता खो देंगे। जो ग्रह सूर्य के इतने समीप हो जाता है कि 24 घंटे में कभी भी दिखाई न दे वह अस्त कहलाता हैं इसलिए सूर्य से बैठ ग्रह अस्त उससे 2, 3, 4 स्थानों में शीघ्र गति और 5 से 9 तक वक्री, 10 से 12 तक सरल योग कहलाता है।

वक्रता- सूर्य जहां बैठा हो वहां से गिनने पर कोई भी ग्रह 5, 6, 7, 8, 9वां होगा तो वह वक्री होगा चाहे पंचांग में लिखा हो या न हो।

वक्री ग्रह– यदि कोई ग्रह अपनी नीच राशि में वक्र होगा तो अपने उच्च का फल देगा। (उत्तरकालामृत के विपरीत राजयोग का यही आधार है।) यदि उच्च राशि में बैठकर वक्र होगा तो शून्य फल देगा।

बलवन्ता– सूर्य मेष राशि में उच्च का होता है। उसके भी 10 अंशों के भीतर परमोच्च का होता है। सिंह राशि में स्वगृही होता है। सिंह राशि के 15 अंशों तक यह दीप्त रहता है। अत: मूल त्रिकोणी कहलाता है 16वें से व कुछ मत से 0 से 20 अंश तक सिंह में मूल त्रिकोणी रहेगा। 20 से 30 रहेगा। इसी तरह तुला के 10 अंश तक परम नीच का होगा इसके आगे केवल नीच होगा। दशम भाव में दिग्बली, नवम भाव में हर्षबली बनता है। रवि शुक्र द्वारा पराजित होता है। सूर्य का अपना दृष्टिकोण होगा वार में एक राशि से दूसरी में प्रवेश करते समय मित्र ग्रह के अंशों में बलवान होता है। अपने उच्च में सिंह राशि में दोपहर को बलवान होता है।

मित्रादि– सूर्य के मित्र चंद्र, मंगल, गुरु, बुध, सम और शत्रु शनि और शुक्र है। तात्कालिक मित्र बुध, गुरु, शुक्र, बुध और शत्रु चंद्र, मंगल हैं।

कारक तत्व– रवि 1, 8, 10 भावों का कारक है। नेत्र, पिता, राज्य, आत्मा व ज्ञानोदय का कारक है। इसके अलावा शक्ति, अतिक्रूरता, उष्णता, प्रभाव, अग्नि, शिव उपासना, धैर्य, कांटेदार वृक्ष, राज्य कृपा, कटुता, बुद्धता, गाय-भैंस, जमीन, रुचि, आत्मविश्वास, ऊंची नज़र, डरपोक मां का बच्चा, मृत्युलोक, हड्डी, पराक्रम, घास, लम्बे प्रयत्न, जंगल, वन में भ्रमण प्रवास, व्यवहार, तपस्या, पित्र, गोलाई, नेत्र रोग, लकड़ी, मस्तिष्क के रोग, मोती, नारापन आकाश का आधिपत्य, पूर्व दिशा, तांबा, रक्ता, लाल कपड़े, खनिज पत्थर, लोक सेवा, नदी तट, सैन्य, केसर, मोटी रस्सी।

रवि के रोग– सिर पीड़ा, बुखार में वृद्धि, क्षय, अतिसार, हड्डी के रोग, हृदय रोग, कब्ज, नेत्र रोग, चित्त में विकार, राजदण्ड व ब्रह्मश्राप 1-5-8 लग्नों में धन स्थान का 2-6-10 लग्नों में 8वें स्थान का 3-7-11 लग्नों में 12वें स्थान तक 4-8-12 लग्नों में 10वें का छठें स्थान का।

स्वरूप– सिंह की आकृति से मिला-जुला चेहरा कुछ चौड़ा व अंडाकार, रौबीला, कुछ पीलापन या लालिमा रंग रूप व्यक्ति में चुंबकीय आकर्षण होगा। सामान्य मझौला कद, चौड़े व पुष्ट कंधे, पूर्ण विकसित हड्डियां होंगी। तेज गति से चलने वाला, पतली कमर, कम बोलने वाला, रौबीला व इकहरे बदन का होता है।

गुण– उदार, उत्साही, रचनात्मक प्रकृति, साहसी, खुशमिजाज, कुशल प्रबंधक, सत्यनिष्ठ, संवेदनशील, दृढ़ निश्चयी, अध्ययन चिंतन में लगे श्रेष्ठ पाठक तथा कला व साहित्य प्रेमी। ऊर्जा शक्ति से भरपूर, बिना उत्तेजना के सोच समझ कर योजनाबद्ध

तरीकों से काम करने वाला, क्षमाशील, मौलिक चिंतन, नयी परिस्थिति में स्वयं को ढाल देने में समर्थ। ऐसे व्यक्ति डांट-डपट से विफल जाते हैं।

दोष– अभिमानी, अहंकारी, व्यर्थ में दूसरे को नीचा दिखाना, मिथ्या आडम्बर, छोटी-छोटी बात पर भड़कने वाले तुनक मिजाज, कम बोलने वाला।

विशेष– स्वयं अपनी प्रशंसा के इच्छुक व गुणी व्यक्तियों की प्रशंसा करने वाला कुलाभिमान अधिक मात्रा में होवे। अपने कार्य क्षेत्र में उन्नति कर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करे ये लोग सोने के आभूषण कर्ता, संगमरमर के पत्थर संबंधित भूगर्भ विज्ञान के कार्यों में सफलता पाते हैं। प्रबंध व्यवस्था, सरकार के कार्य, सेना में अफसर, राजनेता, उद्योगी, होटल के कार्य, तकनीकी अनुसंधान, पशु प्रजनन, पशु चिकित्सक, कृषि अथवा उत्पादों से जीविका पाते हैं। वे अभिनय व खेलकूद में धन व मान भी प्राप्त करते हैं।

अचूल फल

वेशी योग– सूर्य से 2 भाव में चंद्र को छोड़कर ग्रह हो।

वासी योग– सूर्य से 12 भाव में चंद्र को छोड़ कर ग्रह हो।

उभयचरी योग– सूर्य के दोनों तरफ ग्रह हो।

इन योगों में चंद्र राहु की गिनती नहीं है। ये धनदायक योग हैं। शुभ ग्रह हो तो शुभ कार्य से पापग्रह हो तो पापकर्म से दोनों तरफ के ग्रह योग हो तो मिश्र ढंग से यह कमाता है और खाता-पीता मध्यम वर्गीय धनाढ्य होता है।

भास्कर योग– सूर्य से 2रा बुध, बुध से 11वें चंद्र से 5वां या नवें गुरु हो। इस योग से व्यक्ति धन, बलशाली, कला प्रेमी व ज्योतिषी बनता है, सुखी रहता है।

बुधादित्य योग– सूर्य+बुध युति से बुधादित्य योग होता है। यह योग व्यक्ति को बुद्धिमान, चतुर व प्रसिद्धि देता है। अध्यापक, बैंक अधिकारी, लेखाविज्ञ, वकीलों में यह ज्यादा पाया जाता है।

राजराजेश्वर योग– मीन का सूर्य, चंद्र कर्क में लग्नस्थ हो तो यह प्रबल राजयोग है। व्यक्ति ऐश्वर्य वाला व राजसेवी होता है।

राजभंग योग– तुला के 10 अंश तक सूर्य हो तो दुखी दरिद्री होता है।

उन्माद योग– लग्न में सूर्य 7वें मंगल। ऐसा व्यक्ति उन्मादी होता है।

भ्रातृनाश योग– 5वें में कुंभ का सूर्य बड़े भाई का नाश करता है।

पिता हानि योग– तीसरे स्वगृही सूर्य+शुक्र शनि की पूर्ण दृष्टि यह छोटे भाई तथा पिता को हानि करे।

जल से मृत्यु– सूर्य+चंद्र नौंवे भाव में हो तो उसके पिता की मृत्यु जल से होती हैं। शुभ दृष्ट हो तो न हो।

डॉक्टरी योग– कर्क लग्न हो। सूर्य 2रें भाव पर षष्ठेश राहु व शनि के प्रभाव हो तो डॉक्टर बने।

संन्यास योग– कर्क लग्न मे सूर्य धनेश तथा चतुर्थेश व चतुर्थ पर द्वादशंश का प्रभाव और द्वादश पर राहु शनि के प्रभाव हो संन्यासी होगा।

गूंगापन या हकलाना– कर्क लग्न में बुधादित्य युति पर राहु शनि व षष्ठेश के प्रभाव। युति में बलवन्ता हो तो ऊंची शिक्षा पेशा प्रोफेसर या अध्यापन कार्य या ज्योतिष होगा।

तृतीयेश होकर सूर्य बली हो तो छोटे भाई उच्च स्तर के बने बाहुबल ज्यादा हो। दीर्घायु हो। सर्वत्र विजयी हो व ससुर उच्च पदस्थ हो। माता का सुख खूब हो।

सुंदर भवन– चतुर्थेश सूर्य बली हो। खुली रोशनी व हवादार मकान में रहें, चतुर्थेश निर्बल हो। राहु शनि का प्रभाव हो तो कई स्थानान्तरण होने व दरिद्र बना रहे।

चोट योग– 5वें भाव में तुला राशि के सूर्य से हड्डियों के रोग व चोट योग बनते हैं।

तेजस्वी योग– मिथुन लग्न में केतु हो तथा सूर्य चौथे, सातवें या दसवे में हो तो व्यक्ति पराक्रमी व तेजस्वी होता है।

श्रेष्ठ सम्पर्क योग– मिथुन लग्न में सूर्य 10 या 11वें भाव में हो तो व्यक्ति उच्च महत्वाकांक्षी व श्रेष्ठतम लोगों से सम्पर्क करेगा।

नृप तुल्य– कर्क लग्न में सूर्य और मंगल की युति 10वें भाव में हो तो राज्य पक्ष प्रबल व स्वयं राजा तुल्य होंवे।

राजरोग योग– मेष लग्न में सूर्य षष्ठेश युति छठें भाव में या 8वें भाव में हो।

बध्यास्त्री योग– मेष लग्न में सूर्य+शुक्र युति लग्न में 7वें भाव में हो तो संतान नहीं होती।

बहुपुत्र योग– मेष लग्न में बली सूर्य पर गुरु दृष्टि हो। बहु पुत्र, सट्टा लाटरी से धनी हो। ज्योतिषी हो, बली सूर्य भाग्य वृद्धि करे। परीक्षा में अच्छे अंक लावे।

प्रभावशाली योग– मेष का उच्च का सूर्य दसमें भाव में हो शुभ दृष्ट हो।

अधिकारी योग– लग्न में स्वगृही सूर्य, व्यक्ति स्वाभिमानी प्रशासन में कुशल तथा राज्य उच्चाधिकारी होंवे, जनता का सेवक हो।

सम्मान पाना– तुला राशि का सूर्य लग्न में शुभ दृष्ट हो, राज्य सम्मान पावें।

पेट के रोग– गुरु+सूर्य युति षष्ठ भाव में।

उत्तम घराने में विवाह– सप्तमंश सूर्य के बली होने से उत्तम घराने में विवाह हो। व्यापार बढ़े। बंगला होवें, राज्य में बड़ा अफसर होवे।

पिता कीर्तिवन्ता– वृश्चिक लग्न में सूर्य छठे या दसवें में हो।

डूबी हुई रकम मिले– मकर लग्न में सूर्य बली हो तो डूबी हुई रकम सूर्य दशा में मिले।

माता का द्वेषी– सूर्य से 12वें भाव में मंगल हो वह परोपकारी होगी पर माता का द्वेषी होगा।

सीडेन्ट योग– कुंभ लग्न में सूर्य 10वें व चौथे मंगल।

धनी योग– पांचवें भाव में बुधादित्य योग हो।

आजन्म रोगी– मेषलग्न में शनि और छठवें सूर्य।

पैरों में चोट– मेषलग्न में सूर्य 11वें शनि।

पिता से धन प्राप्ति– लग्न से दसवां सूर्य।

राजयोग– मेषलग्न में सूर्य+चंद्र युति।

कन्या का विवाह– तुला लग्न में बली सूर्य हो सात्विक प्रवृत्ति सूर्य दशा में कन्या का विवाह हो व दामाद की भाग्यवृद्धि।

सूर्य जहां बैठता है। उस भाव को बिगाड़ता है। जहां 7वीं दृष्टि करेगा वहां वह उससे अलग रखेगा।

सिंह राशि में मंगल व केतु हो तो सूर्य में आग का प्रभाव होगा। ऐसा सूर्य लग्नश पंचमश नवमंश व चंद्र राशि पर प्रभाव करे तो वहां आग से संपर्क होगा, बिजली या आग से मृत्यु होगी।

यदि सूर्य लग्न से 12वें स्थान में बैठा होगा तो वह 1-8-10 भाव का शुभ फल करेगा। क्योंकि वह इन भावों का कारक है।

14 अगस्त से 15 सितम्बर तक जन्म लोगों के लिए विशेष हितकारी है।

रत्न– रवि का रत्न माणिक्य है। इसकी धातु सोना, तांबा मुख्य है।

उपचार

1. सोने की श्रीयंत्र की पूजा करें। पिरामिड घर में लगाए।
2. रविवार व्रत, जप, दान गेहूं, गुड़, तांबा व लाल फल का दान करें।

3. नित्य सूर्य पजन सूर्य को जल का अर्घ्य दें।
4. बहते पानी में तांबे के सिक्के डाले। नित्य तांबे में रखा जल पीए।
5. घर का मुख्य द्वारा पूर्वाभिमुख रखें। पीली रोशनी आंगन में लगाए।
6. सफेद कपड़े पहने।
7. तांबे का सिक्का काले धागे में पिरोकर गले में रखें।
8. लाल मुंह के बंदरों को गुड़ खिलावें।
9. काम शुरू करने से पहले मिठाई खाकर पानी पीयें।
10. ससुराल में न रहे।
11. पीतल के या तांबे के बर्तन काम में लाए।
12. कसाई से बकरा छुड़ावें या पनरियें यंत्र का पूजा करें।
13. हरिवंश पुराण पढ़ें या सुने।

कोई चार उपाय काम में लें।

❑❑❑

सूर्य का खगोलीय स्वरूप

वास्तव में सूर्य भी एक तारा ही है, जो अन्य करोड़ों तारों के समान आकाशगंगा का एक सदस्य है। परन्तु पृथ्वी के निकट होने के कारण इसका प्रकाश प्रखर है और बड़ा भी दिखता है। सूर्य आकाश में अकेला नहीं है। उसके साथ कुछ पिण्डों का परिवार भी है। सूर्य सौरमण्डल का सम्राट है। हमारे सौरमण्डल का व्यास लगभग 20 अरब कि.मी. है। सभी ग्रह सूर्य को केन्द्र मान कर अण्डाकार कक्षा में उसकी परिक्रमा करते हैं। सूर्य भी अपनी कल्पित धुरी पर परिभ्रमण करता है। इस प्रकार सूर्य लगभग सवा पच्चीस दिन में एक बार आत्म परिक्रमा कर लेता है। 24 घण्टे के दिन में सूर्य की चक्र में भ्रमण गति एक अंश होती है। सारे भचक्र की परिक्रमा वह 375 दिन और 6 घंटे में करता है। कालचक्र से ग्रहों की, ग्रहों से उपग्रहों की उत्पत्ति हुई, उन्हें भी चंद्रमा कहते हैं।

जिस प्रकार पृथ्वी के चारों ओर एक चंद्रमा घूमता है उसी प्रकार मंगल के चारों ओर चंद्रमा घूमता है। गुरु के तेरह, शनि के नौ, अरुण के पांच तथा वरुण के दो चंद्रमा घूमता हैं। बुध, शुक्र, यम, कुबेर तथा इन्द्र ग्रह के कोई चंद्रमा नहीं है। ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थ एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ग्रह अपनी कक्षाओं में जिस समय सूर्य के निकटतम होते हैं, उस समय उनकी गति अधिक तीव्र हो जाती है। जब दूर होते हैं तो इनकी गति मंद हो जाती है। वस्तुत: सूर्य का गुरुत्वाकर्षण ही इन ग्रहों की भ्रमण कक्षाओं को बनाता है और उस पर नियंत्रण भी करता है। सूर्य हमारी पृथ्वी से 15,70,00,000 कि.मी. की दूरी पर है। इसका व्यास 13,52,800 कि.मी. है। सूर्य यदि भीतर से खोखला हो तो पृथ्वी जैसे 13 लाख पिण्ड उसमें समा सकते हैं। पृथ्वी पर जो वस्तु एक किलो भार की है उसका भार सूर्य पर 29 किलो होगा। सूर्य के रवि, विस्वान, भानु, भास्कर, सविता, दिवाकर, प्रभाकर, आदित्य अनन्त, मार्तण्ड, महीध्र आदि अनेक नाम हैं।

सूर्य की गति– सूर्य अपने सम्पूर्ण परिवार (नौ ग्रहों) के साथ किसी अन्य महा सूर्य की परिक्रमा करता है। सूर्य अपनी कल्पित धुरी पर 25 दिन 8 घण्टे में

एक चक्कर (आत्म परिभ्रमण) पूरा कर लेता है। स्थूल माध्यम मान से सूर्य एक महीने में एक राशि, प्रतिदिन एक अंश, 14 दिन में एक नक्षत्र और 3 घटी 20 पल में एक नक्षत्र चरण पर रहता है। यह एक सैकेण्ड में 19 मील अपनी जगह से हट जाता है। तथा सारे भचक्र की परिक्रमा 365 दिन और 6 घण्टे में पूरी कर लेता है। यह कभी भी वक्री नहीं दिखलाई पड़ सकता।

❑❑❑

सिंहलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

सिंहलग्न का स्वरूप

सिंहः सूर्याधिपः सत्वी चपुष्पात् क्षत्रियो वनी।
शीर्षोदयी बृहद्पात्रः पाण्डु पूर्वेड् द्युवीर्यवान्॥12॥

–बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 12

सत्वगुणी चतुष्पद, क्षत्रिय, वनचारी, शीर्षोदय, बृहत् शरीर, पाण्डु-वर्ण, पूर्वदिगवासी, दिनबली है, इसका स्वामी सूर्य है।॥12॥

तीक्ष्णः स्थूलहनुर्विशालवदनः पिङ्गेक्षणेऽपात्मजः,
स्त्रीद्वेषी प्रियमांस काननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।
क्षुतृष्णोदरदन्तामानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान्,
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमना मातुर्विधेयोऽर्कभे ॥5॥

–बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 5

सिंह राशि में स्थित चंद्रमा से जातक तीखे स्वभाव वाला अर्थात् असहिष्णु, अर्थात् जल्दबाजी में काम करने वाला, मोटी हनु वाला, बड़े मुंह वाला, पिंगल अर्थात् काले व पीले मिश्रित नेत्रों वाला, कम पुत्रों वाला, स्त्रियों से द्वेष करने वाला, मांस-मदिरा के प्रति आकर्षण रखने वाला, वन व पर्वत प्रदेशों से विशेष स्नेह रखने वाला, बिना प्रसंग के निरर्थक क्रोध करने वाला, भूख प्यास अधिक अनुभव करने वाला, पेट, दांत, मन के विकास का अनुभव करने वाला, त्यागी, पराक्रमी, स्थिर बुद्धि, घमंडी तथा माता के वश में रहने वाला होता है।

सिंह विलग्ने तु भवेत् प्रसूतो नरो विभागी रिपुमर्दनश्च।
लग्ने विधत्ते विधनं मनुष्यं बह्वाशिनं नित्यविमुक्तलज्जम्।
निन्द्यं सतां नीचरत कृतघ्नम्॥5॥

–वृद्धयवन जातक अ.24/श्लो.5/ पृ.288

सिंहलग्न में मनुष्य का जन्म हो तो जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, भाग्य फल में कमी वाला, धन से रहित, अधिक खाने वाला, सदैव लज्जा से रहित व्यवहार करने वाला अर्थात् संकोचहीन होकर व्यवहार करने वाला होता है। सज्जनों द्वारा निन्दित, नीच कार्यों में रत व कृतघ्न होता है।

जातः सिंहविलग्नकेऽल्पतनयः संतुष्टधीहिंसकः।
शूरो राजवशीकरो जितरिपुः कामी विदेशं गतः॥5॥

–जातक पारिजात श्लो. 5/पृ.678

थोड़े पुत्र, चित्त में संतोष अधिक हो, हिंसक, शूरवीर, राजा को वश में करने वाला (अर्थात् राजा का प्रिय) शत्रुओं पर विजयी, कामी, विदेश जन्म भूमि से अन्यत्र स्थान में रहे।

सिंहादिद्रेष्काणे दाता भर्तारिनिर्जिगीषुः स्यात्।
बहुधनयोपित्सुसुहृद्बहुनृपजनसेवकः सुसत्वश्च॥

–सारावली श्लो. 10/पृ. 466

यदि जन्म लग्न में सिंह राशि व सिंह राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक दानी, भर्ता अर्थात् भरण (पालन) करने वाला, शत्रु को जीतने वाला, अधिक बलवान, अधिक स्त्री वाला, सुन्दर मित्रों से युक्त, अधिक राजाओं का सेवक और बलवान होता है।

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साहो रण विक्रमी॥

–मानसागरी अ. 1/श्लो. 5

सिंहलग्न वाला जीव संसार भोगी, शत्रु नाशक, अल्पाहारी, परिवार नियोजक, पराक्रमशील, कर्मवादी साथ ही विशेष स्वाभिमानी रहे।

भोज संहिता

सिंहलग्न का स्वामी सूर्य है सूर्य ग्रहराज होने के साथ साथ एक तेजस्वी ओजयुक्त पौरुष का प्रतिनिधित्व करता है, इस लग्न वाले व्यक्ति निर्भीक, उदार व अभिमानी होते हैं। इनके चित्त में दृढ़ता, साहस और धैर्य विशेष मात्रा में पाये जाते हैं। सूर्य आत्मकारक ग्रह है। यह आत्मशक्ति व आत्म विश्वास का कारण ग्रह माना जाता है। अतः सिंहलग्न वाले पुरुषों में आत्मशक्ति गजब की होती है। ये कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी नहीं घबराते, हिम्मत हारना तो इन्होंने सीखा ही नहीं। आपके जन्म समय में सिंहलग्न उदित हो रहा था, जिसका स्वामी सूर्य है।

सामान्यतया सिंहलग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी सहासी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भावपूर्ण रूप में विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों में ये प्राय: युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुखपूर्वक इनका उपयोग करते हैं। ये जातक सिद्धान्तवादी होते हैं तथा अपने सिद्धातों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव से परोपकार का भाव भी रहता है फलत: ये पूर्ण विकास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा या यश समाज में विद्यमान रहता है। साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अत: इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय पुरुष होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे जिससे जातक को भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उसकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलत: आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

जातक हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा वह अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रदर्शन करेंगे। आपको स्वपुरुषार्थ से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगे तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोकप्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

आपमें शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्त्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। राजनीति या व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगे तथ इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अत: यदा-कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा विद्यमान तथा समय-समय पर योगाभ्यास करेंगे। आपमें गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा। फलत: आपके कार्य धैर्य एवं गंभीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा आप श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी

अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रुचिकर लगेगा। अत: आप समय-समय पर ऐसे स्थानों की सैर करते रहेंगे। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रानुसार फलादेश

मा-मी-मु-मे. मो-टा-टी-टु. टे

मघा-4. पूर्वाफाल्गुनी-4 उत्तराफाल्गुनी-4

"मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तरा च पादमेकं सिंह"

मघा नक्षत्र संपूर्ण और पूर्वाफाल्गुनी पूरा तथा उत्तराफाल्गुनी का प्रथम चरण मिलाकर सिंह राशि बनती है। मघा केतु का नक्षत्र है और पूर्वाफाल्गुनी शुक्र का नक्षत्र है तथा उत्तराफाल्गुनी सूर्य का नक्षत्र है। यहां केतु+शुक्र+सूर्य के समन्वय से स्वभाव व गुणों में परिवर्तन आयेंगे।

मघा नक्षत्र

चरण	अंश	नवमां.-शेश	राशीश	नक्षत्रेश	उप-नक्षत्रेश	अंश से तक
प्रथम	0.00 से 3.20	मं.	सू.	के.	के. श.	0.0.0 से 0.46.40 0.46.40 से 3.0.0
द्वितीय	3.20 से 6.40	शु.	सू.	के.	सू. चं. मं.	3.0.0 से 3.40.0 3.40.0 से 4.46.40 4.46.40 से 5.53.20
तृतीय	6.40 से 10.0	बु.	सू.	के.	रा. गु.	5.33.20 से 7.33.20 7.33.20 से 9.20.0
चतुर्थ	10.0 से 13.20	चं.	सू.	के.	श. बु.	9.20.0 से 11.26.40 11.26.40 से 13.20.0

यदि आपका जन्म 'मघा-नक्षत्र' में हुआ है तो आप ठिगने कद के सुदृढ़ वक्ष-स्थल एवं मजबूत जंघाओं के मालिक हैं। गर्दन कुछ मोटी, वाणी में कुछ

कर्कशता व रूखापन सिंह राशि वाले व्यक्ति की प्रमुख विशेषता है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के प्राय: 5 व 6 नम्बर के दांत तीखे, जिह्वा चौकोर (Flat) व खुरदरी होती है। मघा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों की आंखों में कुछ विशेष आकर्षण होता है, चेहरा शेर के समान भरा हुआ व रोबीला होता है। प्राय: इस राशि वाले व्यक्ति पुरुषार्थ व अपने पौरुष प्रदर्शन के लिए लालायित रहते हैं तथा इनको शानदार मूंछें रखने का बड़ा शौक रहता है। कुछ हद तक अभिमानी होने के नाते ये बहुत जल्दी नाराज हो जाते हैं तथा अपनी मर्दानगी तथा बलशाली शक्ति का दुरुपयोग करने में भी नहीं हिचकिचाते।

पूर्वाफाल्गुनी

चरण	अंश	नवमां.-शेश	राशीश	नक्षत्रे.श	उप-नक्षत्रेश	अंश से तक
प्रथम	13.20 से 16.40	सू.	सू.	शु.	शु. सू.	13.20.0 से 15.33.20 15.33.20 से 16.13.20
द्वितीय	16.40 से 20.00	बु.	सू.	शु.	चं. मं. रा.	16.13.20 से 17.20.0 17.20.0 से 18.6.40 18.6.40 से 20.6.40
तृतीय	20.0 से 23.20	शु.	सू.	शु.	गु. शु. बु.	20.6.40 से 21.53.20 21.53.20 से 26.40.00 24.00 से 25.53.20
चतुर्थ	23.20 से 26.40	मं.	सू.	शु.	कें. सु. चं.	25.53.20 से 26.40.00 26.40.00 से 27.20.00 27.20.00 से 26.26.40
उत्तराफाल्गुनी						
प्रथम	26.40 से 30.00	गु.	सू.	सू.	मं. रा.	28.26.40 से 29.13.20 29.13.20 से 30.00.00

यदि आपका जन्म पूर्वाफाल्गुनी-नक्षत्र में है तथा आपका नाम 'ट' से प्रारम्भ होता है तो आप उन भाग्यशाली पुरुषों में से हैं जिनका दूसरे लोग अनुसरण करना

चाहते हैं। आपकी Will Power बहुत शक्तिशाली हैं तथा आपमें शासन करने की प्रवृत्ति कुछ विशेष बनी रहती है। यदि आपके कानों पर बाल हैं तो निश्चित् रूप से आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे भयभीत रहते हैं। तथा परिवार में सब आपकी आज्ञा का पालन करते हैं तथा आपकी अनुशासनात्मक प्रवृत्ति पूर्ण रूप से सफल कही जा सकती है। यदि आप सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हैं तो आप प्रशासनिक शाखा में गहरा संबंध रखते हैं।

सिंह राशि सम्पूर्ण

यह नक्षत्र सिंह राशि के 13.20 से 26.40 तक पड़ता है। यह नक्षत्र शुक्र का है इसका पर्याय भाग्य भी है। अत: यह भाग्य नक्षत्र है जातक परिजात कहता है– ''फाल्गुन्यां चपल: कुकर्मचरित: त्यागी दृढ़: कामुक:'' अर्थात् व्यक्ति चंचल स्वभाव बुरे कर्मों में लगा हुआ त्यागी, दृढ़निश्चयी व कामी होगा। शुक्र एक कामुक ग्रह है। इस नक्षत्र में मन रूपी चंद्र आते ही चपल व कामातुर हो जाता है। शुक्र वीर्य है अत: इस नक्षत्र में लग्न वीर्यशाली एवं चंद्र भी दृढ़ होता है। शुभ व्ययी होना, त्यागी होना शु.+सू.+च. के प्रकट लक्षण हैं।

चंद्रमा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में

प्रियंवदो भूपति सेवकश्च, दातानर: कान्तियुतो भगर्क्षे॥

यह पूर्वाफाल्गुनी शुक्र का नक्षत्र है। इसलिए चंद्र इस लग्न में या नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति मधुर भाषी, राज्य कर्मचारी दानी व सुंदर होता है। शुक्र शुभ ग्रह है अत: इसका व्यवहार मीठा होता है। मंत्री होने से इसका राज्य से घनिष्ठ संबंध है। सुन्दरता विशेष गुण है और शुभ ग्रह होने से दानशूरता तो होगी ही!

पूर्वाफाल्गुनी का चरणगत फल

जातक सादीपानुसार चरणों के फल– ''समर्थो धार्मिको राजा रोगी क्रूरोऽल्पजीवित:, पूर्वाफाल्गुनी जातक फलं पादचतुष्टये॥ प्रथम चरण में चंद्र हो तो नवांशेश सूर्य होने से जातक राजा या राजातुल्य ऐश्वर्य वाला बनता है।

पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण में– चंद्र हो तो जातक रोगी रहेगा, कारण नवांशेश बुध से शुक्र व चंद्र का संबंध रोगकारक बनेगा।

पूर्वाफाल्गुनी के तृतीय चरण में– व्यक्ति क्रूर होगा। इसमें भी नवांशेश शुक्र है और नक्षत्रेश भी शुक्र है दोनों दानवी ग्रहों का प्रभाव स्वभाव में क्रूरता लायेगा।

पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण में– अल्पायु भोगने वाला हो। कारण नवांशेश मंगल+शुक्र+चंद्र में चंद्र के मंगल+शुक्र शत्रु है। मंगल क्रूर ग्रह होने से चंद्र की हानि देगा। अत: लग्न की आयु कम करेगा।

उत्तराफाल्गुनी प्रथम चरण में– इसमें यद्यपि राशि तो सिंह की है और नक्षत्र भी सूर्य का है, नवांशेश गुरु होगा। दोनों विद्या के लिए शुभ है। अत: ज्ञान बुद्धि करने में चंद्र मन सहायक होगा। फलस्वरूप व्यक्ति पंडित हो।

सिंहलग्न की स्त्रियां

सिंहलग्न में जन्म लेने वाली स्त्री मोटी, चपटी नाक वाली, मांस खाने वाली, शक्ति सम्पन्ना और थोड़ी संतति वाली होती है। इसको पित्त प्रकृति होती है और देश–विदेश भ्रमण की बहुत शौकीन होती है। अपने बाहुबल से यह पर्याप्त धन पैदा कर सकती है। पति से प्राय: अनबन रहती है। मुंह पर तिल होता है। मतान्तर से इस राशि वाली स्त्री में कई पुत्र और तीन कन्याएं होती हैं। सातवें और ग्यारहवें साल में यह अस्वस्थ होती है। आयु 60 वर्ष की हो सकती है। इसकी मृत्यु पित्त रोग से ऑपरेशन से अथवा विष से होती है।

सिंहलग्न के विचारणीय बिन्दु

सिंहलग्न में मंगल और सूर्य शुभ फल देते है। बुध और शुक्र अशुभ है। गुरु चंद्र और शनि सम है। बुध और शनि मारक होते हैं। धनेश-लाभेश बुध व्यापार से धनकारक होता है। मुख्य ग्रह सूर्य और मंगल ही होते हैं। शनि विशेष पापी बनता है। लग्न में सिंह राशि के समान धीर और वीर बनाती है।

सिंहलग्न की विशेषता

- व्यक्ति बड़े हाथ पैर वाला, चौड़े हृदय वाला ताम्रवर्ण हो। कद औसत हो। कंधे चौड़े मुख की आकृति चौड़ी और पुष्ट और आकर्षक हो। आंखें सुंदर और भाव प्रकट करने वाली हो। पतली कमर हो। शरीर का ऊपरी भाग ज्यादा पुष्ट बली हो। नेत्रों में कुछ-कुछ पीलापन हो, मोटी ठोडी और बड़ा चेहरा होता है।
- सिंहलग्न में सिंह का चंद्र हो अन्य ग्रह न हो तो स्त्री गोरी होगी। अगर चंद्र शुक्लपक्ष का है तो विशेष गोरी हो। अगर कृष्णपक्ष का चंद्र हो तो रोगिणी हो, कलह प्रिय हो। पतले शरीर की हो व कुछ खराब स्वभाव की हो। ईर्ष्यालू हो। माता का विशेष प्यारी हो।

- तुनक मिजाज हो। छोटी-सी बात पर क्रोध कर ले, जिस पर क्रोध नहीं करना चाहिए करे, व बड़ी बात पर शांत रहे। मजबूत मन हो। धीरज वाली हो। अपने हृदय की बात भावों से व चेहरे से प्रकट नहीं होने दें। इसका रहस्य कोई न जान सकें। किसी कार्यक्रम को चलाने की व नेतृत्व करने की शक्ति हों। तेजस्विनी हो। कठिन परिस्थितियों में भी न घबरायें।
- लग्न में शनि बैठा हो तो स्त्री के जीवन में रंगीनता की कमी रहेगी शौकीन नहीं होगी, नीरस जीवन रहेगा।
- वर्ष 5, 10, 27, 30 में कष्ट हों। आगे 45, 54, 60, 65 में कष्ट हो तथा 70 वर्ष तक की आयु बनती है।
- अभिमानिनी होगी। पराक्रम वाली हों व स्थिर बुद्धि वाली हों। लग्न में सूर्य से नेत्र रोगी बने काणत्व या रतौंधी रोग संभव है।
- निर्बल सूर्य से आंख के रोग, पेट के रोग, हृदय के रोग, हृदय विकार व राज्य से विरोध पाए।
- हड्डी में कष्ट व पाप प्रभावी सूर्य हो तो दिल या पेट में कष्ट रहें।
- सिंह राशि व सूर्य तथा 5वां भाव पंचमेश यदि पाप प्रभावी हो तो हृदय गतिरोध व पेट के रोग बनते हैं।
- सिंह राशि में अकेला मंगल हो तो उन्नति, भाग्य योग से होती है। बाकी आदमी या औरत निकम्मे भी पाये जाते हैं परन्तु मंगल पर गुरु दृष्टि हो तो शुभ फल होगा।
- सिंहलग्न में मंगल हो तो मांगलीक दोष नहीं होता है। सिंहलग्न में मंगल चंद्र, गुरु या बुध से युति करें तो मांगलिक दोष नहीं होता।
- सिंहलग्न में सूर्य हो उस पर गुरु की दृष्टि हो मंगल भी लग्न में हो तो विशेष धन योग बनेगा। सिंहलग्न में शनि हो तो रक्ताभिसरण दोष देगा। स्वभाव मिलनसार रहेगा और रौबदार भी बना रहेगा।
- लग्न में सिंह राशि का राहु हो तो राजवैभव प्राप्त होंगे। सिंहलग्न में मंगल व शनि दोनों ही हो तो अपमृत्यु या अपघात करेगा या जेल जायेगी या रिश्वत का आरोप लगेगा।
- लग्न में सिंह का चंद्र हो तो मनुष्य स्थिर, मितभाषी और काम करने में निराला हो। कामेच्छा थोड़ी हो।
- व्यक्ति साहसी व महत्वाकांक्षी हो। लग्न में सिंह का शुक्र शत्रुनाशक है परन्तु विवाह में विलम्ब देता है या बना बनाया विवाह भी ध्वस्त कर देता है।

❑ लग्न में सूर्य, शनि, शुक्र तीनों हो तो जातक या जातिका का विवाह नहीं होगा।

सिंहलग्न पुरुष संज्ञक व अग्नि तत्त्व प्रधान राशि है। आप उदार हृदय होने के नाते लोगों को क्षमा कर देते हैं। परन्तु यदि कोई आपके मान, पद व प्रतिष्ठा पर कालिख पोतने की कोशिश करता है तो आप उसे कभी भी क्षमा नहीं करेंगे। आप प्रतिष्ठा व सम्मान के लिए सब कुछ करने को उतारू हो जायेंगे। आपके जोश, हिम्मत व रौब के सामने शत्रु के हौंसले पस्त हो जायेंगे। शत्रु आपके सामने आने से हमेशा घबरायेगा। इसलिए पीठ पीछे आपकी बुराई होगी व सन्मुख प्रशंसा। आप चापलूस लोगों से बचें।

सिंहलग्न चतुष्पद, शीर्षोदर्य व दिग्बली है। रात्रि के कार्यकलाप आपके लिए अनुकूल नहीं कहे जा सकते। आप किसी के अधीनस्थ रहकर कार्य नहीं कर सकते। आप स्वच्छंदचारी व स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्ति हैं। यदि आप व्यापारी हैं तो आप देखेंगे कि आपका भागीदार आपसे कुछ दबा हुआ व डरा हुआ सा रहेगा। यह आपकी प्रकृति शक्ति व जन्मजात विशेषता है।

यदि आपका जन्म 17 अगस्त व 16 सितम्बर के बीच में हुआ है तो 22 वर्ष की अवस्था में आपका भाग्योदय प्रारंभ हो जाता है। वीरता सम्पन्न होने के नाते आप सैनिक या पुलिस विभाग में शीघ्र उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। सिंह राशि वाले पुरुषों को वसीयत के द्वारा धन जायदाद मिलने की संभावना रहती है। जायदाद व बंटवारे के कारण संभवतः संबंधियों से मन मुटाव होगा। उत्साही, शूर-क्रोधी व तेजस्वी होने के नाते आप शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण समर्थशाली रहेंगे। आप दूसरों का विश्वास सहज ही जीत लेंगे। जिससे आपको सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी। सेक्स के मामले में आप कामुक प्रवृत्ति के नहीं हैं। आप संभोग में ज्यादा रुचि नहीं लेते और जब लेते हैं तो पूर्णतया उसी में लीन हो जाते हैं।

सिंहलग्न वालों के पिता पुत्र में कम बनती है। धार्मिक क्षेत्र में आप शक्ति के उपासक हैं। भैरू, शिव व सूर्य इत्यादि शक्ति प्रधान देवताओं में आपकी रुचि रहेगी। सिंह राशि उष्ण स्वभाव, अल्प संतति पीतवर्ण, भ्रमणप्रिय व निर्जल राशि है। आपको ललाईदार वस्तुओं में रुचि रहेगी। सूर्य का तेजोमय माणिक्य-रत्न आपके लिए सदा सर्वथा अनुकूल व शुभद रहेगा।

❑❑❑

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशां धर्म
1	अश्विनी	चू,चे,चो,लू	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि. 1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरू	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेष	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरू	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प । हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरू	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरू	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
21.	उ. वा.	भे	धनु	गुरू	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. वा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,चो,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 2 सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरू	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरू	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरू	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरू	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

क्र. स.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
1.	अश्विनी	अश्वि. कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
9.	आश्लेष	सर्प	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
13.	हस्त	सूर्य	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

क्र. स.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
21.	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
23.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
25.	पूर्वा भा.	अजेकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
26.	उ. भा.	अहिर् बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

सिंहलग्न पर अंशात्मक फलादेश

सिंहलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–मघा
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–4/3/20/0
4. वर्ण–क्षत्रीय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–पितर
10. वर्णाक्षर–मा
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'अपुत्र:'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है। मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक अल्प पुत्र संतति वाला होता है। यहां लग्न स्वामी, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी सभी में परस्पर शत्रुता होने से यह योग बनता है।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है। कमजोर है। लग्न बली नहीं होने से जातक का विकास रुका हुआ रहेगा। सूर्य की दशा कमजोर फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–मघा
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–4/3/20/0

4. **वर्ण**–क्षत्रीय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मा
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'अपुत्र:'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है। मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक अल्प पुत्र संतति वाला होता है।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंशों' का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा
2. **पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–4/3/20/0
4. **वर्ण**–क्षत्रीय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मा
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'अपुत्र:'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है। मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक अल्प पुत्र संतति वाला होता है।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों से होने से लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–मघा **2. पद**–2

3. नक्षत्र अंश–4/3/20/0 से 4/6/40/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रीय **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–मूषक **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–पितर

10. वर्णाक्षर–मी **11. वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–सूर्य **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान् भवेत्'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है। मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से जातक तेजस्वी पुत्र का पिता होगा।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश सूर्य की दशा अच्छा फल देगी। मंगल की दशा में भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–मघा **2. पद**–2

3. नक्षत्र अंश–4/3/20/0 से 4/6/40/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रीय **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–मूषक **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–पितर

10. वर्णाक्षर–मी **11. वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–सूर्य **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान् भवेत्'

मघा नक्षत्र में जन्म व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है। मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से जातक तेजस्वी पुत्र का पिता होगा।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भाग्योदय कारक है पर शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सिंहलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा 2. **पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–4/3/20/0 से 4/6/20/0 तक

4. **वर्ण**–क्षत्रीय 5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आघ 9. **नक्षत्र देवता**–पितर

10. **वर्णाक्षर**–मी 11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–सूर्य 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान् भवेत्'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक होगा। ऐसा जातक देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से जातक तेजस्वी पुत्र का पिता होगा।

लग्न यहां पांच से छ: अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भाग्योदय कारक है पर शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सिंहलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा 2. **पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–4/6/40/0 से 4/10/0/0 तक

4. **वर्ण**–क्षत्रीय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मू
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'तीव्ररोगी'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्राय: रोगी होता है। जातक को संक्रामक रोग शीघ्र प्रभावित करेंगे।

यहां लग्न छ: से सात अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है। बलवान है। लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में भाग्योदय होगा पर बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा
2. **पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–4/6/40/0 से 4/10/0/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रीय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मू
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'तीव्ररोगी'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है।

वह देवताओं का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्राय: रोगी होता है। जातक को संक्रामक रोग शीघ्र प्रभावित करेंगे।

यहां लग्न सात से आठ अंशों में भीतर होने से 'उदित अंशों' में है। बलवान है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा पर बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा
2. **पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–4/6/40/0 से 4/10/0/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रीय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मू
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'तीव्ररोगी'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्राय: रोगी होता है। इसे संक्रामक रोग शीघ्र प्रभावित करते हैं।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में है। 'उदित अंशों' में है, बलवान है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा पर धन की प्राप्ति बुध की दशा में होगी।

सिंहलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–4/10/0/0 से 4/13/20/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रीय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–पितर

10. **वर्णाक्षर**–मे

11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–सूर्य

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितश्च'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वयं सूर्य है जो कि लग्नेश भी है।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा

2. **पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–4/10/0/0 से 4/13/20/0 तक

4. **वर्ण**–क्षत्रीय

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–मूषक

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–पितर

10. **वर्णाक्षर**–मे

11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–सूर्य

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितश्च'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वयं सूर्य है जो कि लग्नेश भी है।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा 2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–4/10/0/0 से 4/13/20/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रीय 5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य 9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मू 11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितश्च'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वयं सूर्य है जो कि लग्नेश भी है।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा 2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–4/10/0/0 से 4/13/20/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रीय 5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य 9. **नक्षत्र देवता**–पितर

10. वर्णाक्षर–मू
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्रमा
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'पण्डितश्च'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वयं सूर्य है जो कि लग्नेश भी है।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य में होने से आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा श्रेष्ठ फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–4/16/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–भग
10. वर्णाक्षर–मो
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'समर्थो'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। जिसका देवता भग एवं स्वामी शुक्र कहा गया है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर होता है। पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न एवं समर्थ होता है।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा श्रेष्ठ फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी
2. **पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–4/16/40/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–मो
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'समर्थो'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। जिसका देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न एवं समर्थ होता है।

यहां लग्न चौदह से पंद्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी
2. **पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–4/16/40/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–मो
11. **वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–सूर्य · **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'समर्थो'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का धनी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा जातक सर्वगुण सम्पन्न एवं समर्थ होता है।

यहां लग्न पंद्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी **2. पद**–2

3. नक्षत्र अंश–4/16/40/0 से 4/20/0/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रिय **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–मूषक **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–भग

10. वर्णाक्षर–टा **11. वर्ग**–श्वान

12. लग्न स्वामी–सूर्य **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'धार्मिको'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का धनी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण का स्वामी बुध होने से जातक वेद-शास्त्रों का ज्ञाता एवं धर्म शास्त्रों का मर्मज्ञ होता है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में पूर्ण बली है। सूर्य की दशा जातक के लिए स्वास्थ्य वर्धक साबित होगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी 2. **पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–4/16/40/0 से 4/20/0/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय 5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–टा 11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिको'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का धनी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण का स्वामी बुध होने से जातक वेद-शास्त्रों एवं धर्मशास्त्रों का ज्ञाता होता है।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है पूर्ण बली है। सूर्य की दशा जातक के स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 18 से 19

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी 2. **पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–4/16/40/0 से 4/20/0/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय 5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–टा 11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिको'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण का स्वामी बुध होने से जातक वेद-शास्त्रों एवं धर्मशास्त्रों का ज्ञाता होता है।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। सूर्य की दशा स्वास्थ्यवर्धक होगी। मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी 2. **पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–4/20/0/0 से 4/23/20/0 तक

4. **वर्ण**–क्षत्रिय 5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–भग

10. **वर्णाक्षर**–टी 11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–सूर्य 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व. 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'क्रूर'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है। शुक्र एक दानवी ग्रह है। लग्नेश सूर्य का साथ इसका संबंध क्रूर शत्रुता का है। फलत: इस नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होगा।

यहां लग्न उन्नीस से बीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। सूर्य की दशा स्वास्थ्यवर्धक होगी। मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी 2. **पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–4/20/0/0 से 4/23/20/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय 5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–टी 11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व. 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
18. **प्रधान विशेषता**–'क्रूर'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है। शुक्र एक दानवी ग्रह है, लग्नेश सूर्य के साथ इसका संबंध क्रूर शत्रुता का है। फलत: इस नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होगा।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। सूर्य की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सिंहलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी 2. **पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–4/20/0/0 से 4/23/20/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय 5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक 7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–टी 11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व.
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
18. प्रधान विशेषता–'क्रूर'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है तथा नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है। शुक्र एक दानवी ग्रह है, लग्नेश सूर्य के साथ इसका संबंध क्रूर शत्रुता का है। फलत: इस नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होगा।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। सूर्य की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सिंहलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–4/23/20/0 से 4/26/40/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–भग
10. वर्णाक्षर–टू
11. वर्ग–श्वान
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है। पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु तथा क्रूर ग्रह है। मंगल, सूर्य, शुक्र तेजस्वी ग्रह हैं। अत: ऐसा जातक संसार में कम ही जी पाता है।

यहां लग्न बाईस से तैईस अंशों में अवरोह अवस्था में बलवान है। सूर्य की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–4/23/20/0 से 4/26/40/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–टू
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है। पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु एवं क्रूर ग्रह है। मंगल, सूर्य, शुक्र भी तेजस्वी ग्रह हैं। अतः ऐसा जातक संसार में कम ही जी पाता है।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है तथा बलवान है। सूर्य की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–4/23/20/0 से 4/26/40/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–टू
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है। पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु एवं क्रूर ग्रह है। मंगल, सूर्य, शुक्र भी तेजस्वी हैं। अत: ऐसा जातक संसार में कम ही जी पाता है।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों में अवरोह अवस्था में है तथा बलवान है। सूर्य की दशा स्वास्थ्य वर्धक है। मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी
2. **पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–4/23/20/0 से 4/26/40/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–भग
10. **वर्णाक्षर**–टू
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु एवं क्रूर ग्रह है। मंगल, सूर्य, शुक्र तेजस्वी ग्रह हैं। अत: ऐसा जातक संसार में कम ही जी पाता है।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। सूर्य की दशा स्वास्थ्य वर्धक है। मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–4/30/0/0

4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–ट
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डित:'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद लड़ाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरों के इशारे पर चलना इन्हें बिलकुल पसंद नहीं होता। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान् होता है।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीन बली है। सूर्य की दशा में जातक के स्वास्थ्य की रक्षा होगी। मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। गुरु की दशा शुभ फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–4/30/0/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–टू
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डित:'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद लड़ाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरों के

ईशारे पर चलना इन्हें बिलकुल पसंद नहीं होगा। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान् होता है।

यहां लग्न सत्ताईस से अठाइस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। सूर्य की दशा में जातक के स्वास्थ्य की रक्षा होगी। मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। गुरु की दशा शुभ फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी | **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–4/30/0/0

4. वर्ण–क्षत्रिय | **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–गौ | **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य | **9. नक्षत्र देवता**–अर्यमा

10. वर्णाक्षर–टू | **11. वर्ग**–श्वान

12. लग्न स्वामी–सूर्य | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'पण्डित:'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद लड़ाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरों के ईशारे पर चलना इन्हें बिलकुल पसंद नहीं होता। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान् होता है।

यहां लग्न अठाईस से उन्नतीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीन बली' है। जातक का सारा तेज समाप्ति की ओर है। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी | **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–4/30/0/0

4. **वर्ण**–क्षत्रिय

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–गौ

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा

10. **वर्णाक्षर**–टू

11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–सूर्य

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डित:'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद, लड़ाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरों के ईशारे पर चलना इन्हें बिलकुल पसंद नहीं होता। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान् होता है।

यहां लग्न उन्नतीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में मृतावस्था में है एवं निस्तेज है। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

❑❑❑

सिंहलग्न और आयुष्य योग

1. सिंहलग्न वालों के लिये बुध परम पापी एवं मुख्य मारकेश का काम करेगा। यहां चंद्रमा सहायक मारकेश का काम करेगा। शनि पापी है तथा सूर्य आयुष्य प्रदाता ग्रह है।
2. सिंहलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु वात या पित्त विकार से, शस्त्र से, घाव, अतिसार (दस्त) या बदहजमी के रोग से होती है।
3. सिंहलग्न वालों की औसत आयु 70 वर्ष मानी गई है। जातक को जन्म के उपरान्त 1, 5, 10, 13, 15, 22, 25, 28, 32, 36, 45, 51, 58 और 61 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट तथा अल्प मृत्यु का भय रहता है।
4. सिंहलग्न में गुरु हो, शुक्र कर्क का, चंद्रमा द्वितीय स्थान में कन्या राशि का और पाप ग्रह तीसरे, छठे एवं ग्यारहवें स्थान पर हो तो ऐसा व्यक्ति चिरंजीवी होता है।
5. सिंहलग्न हो, सभी केंद्र में (1/4/7/10) में शुभ ग्रह हो तथा पाप ग्रह तीसरे, छठे एवं एकादश भाव में हो तो जातक चिरंजीवी होता है।
6. सिंहलग्न में सूर्य हो तो जातक दीर्घ देह वाला एवं उत्तम आयु को भोगने वाला होता है।
7. सिंहलग्न में सूर्य एवं मंगल हो तो जातक सौ वर्ष तक की स्वस्थ आयु को भोगता है।
8. सिंहलग्न में सूर्य एवं मंगल आठवें हो तथा वृश्चिक का गुरु केन्द्र में हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।
9. सिंहलग्न में सिंह का नवमांश हो तथा चार ग्रह त्रिकोण में हों तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

10. सिंहलग्न में शनि उच्च का यदि तृतीय भाव में हो तो जातक को दीर्घायु देता है।

11. सिंहलग्न में सूर्य के साथ शनि कुम्भ राशि में केन्द्रवर्ती हो तो जातक सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को भोगता है।

12. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु लग्न में हो तथा शुक्र व अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।

13. सिंहलग्न में चंद्रमा छठे मकर का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

14. सिंहलग्न में वृश्चिक का मंगल दशम भाव को देखता हो, बुध एवं शुक्र की युति केंद्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।

15. सिंहलग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें धनु का एवं सूर्य सातवें कुम्भ का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

16. सिंहलग्न में कुम्भ का गुरु पाप ग्रहों के साथ केन्द्र में हो तो ऐसा व्यक्ति ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. शनि लग्न में, वृश्चिक का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो तथा पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. सिंहलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक एवं विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य पाप ग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश गुरु पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक 45 वर्ष की आयु तक ही जी पाता है।

21. सिंहलग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

22. सिंहलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश सूर्य निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय व द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

23. सिंहलग्न में मेष का गुरु एवं मीन के मंगल के परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

24. सिंहलग्न में लग्नस्थ सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो लग्न से दूसरे एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्न में एकाधिक शत्रु ग्रहों की युति हो तो ऐसे जातक की मृत्यु 47वें वर्ष में अस्त्र-शस्त्र एवं विस्फोटक सामग्री से होती है।

25. सिंहलग्न में सूर्य मकर का एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

26. सिंहलग्न के दूसरे घर कन्या राशि में राहु+शुक्र+शनि+सूर्य, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा कुछ समय के बाद स्वयं भी मर जाता है।

27. सिंहलग्न के प्रथम भाव में सूर्य+शनि+राहु+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र गुजर जाता है।

28. सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो तथा सातवें शुक्र हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। जातक को कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

29. सिंहलग्न के द्वादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृ घातक होता है।

30. सिंहलग्न के नवम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृ घातक होता है।

31. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम में शनि एवं चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

32. सिंहलग्न में चंद्रमा पाप ग्रह के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. सिंहलग्न में षष्ठेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

34. सिंहलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

सिंहलग्न और रोग

1. सिंहलग्न म सूर्य सातवें हो तो जातक को नेत्र रोग होता है।
2. सिंहलग्न में शनि हो तो मनुष्य जन्म से अंधा होता है।
3. सिंहलग्न में शनि हो तो मनुष्य भेंगा (बाडा) होता है।
4. सिंहलग्न में षष्टेश शनि लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
5. सिंहलग्नस्थ सूर्य और चंद्रमा को यदि मंगल किंवा शनि देखे तो मनुष्य नेत्रहीन हो जाता है।
6. सिंहलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश चंद्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो जो जातक को हृदय रोग होता है।
7. सिंहलग्न में चतुर्थेश मंगल, अष्टमेश गुरु के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. सिंहलग्न में चतुर्थेश मंगल कर्क राशि का अथवा आठवें हो एवं अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
9. सिंहलग्न में शनि वृश्चिक का चौथे, षष्टम भाव में सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
10. जातक पारिजात के अनुसार सिंहलग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
11. सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में शनि हो तथा कुंभ का सूर्य सातवें हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
12. सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश सूर्य निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
13. सिंहलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

14. सिंहलग्न में सूर्य+मंगल+गुरु की युति एक साथ दु:स्थानों में हो तो ऐसे जातक की वाहन दुर्घटना में अकाल मृत्यु होती है।

15. सिंहलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश सूर्य बलहीन हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

16. सिंहलग्न में क्षीण चंद्रमा लग्नस्थ हो, लग्न को पाप ग्रह देख रहा हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

17. सिंहलग्न में चंद्रमा छठे मकर का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केंद्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

18. सिंहलग्न में वृश्चिक का मंगल दशम भाव को देखता हो, बुध एवं शुक्र की युति केंद्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।

19. सिंहलग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें धनु का एवं सूर्य सातवें कुंभ का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

20. सिंहलग्न में कुंभ का गुरु पाप ग्रहों के साथ केंद्र में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान् होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. शनि लग्न में, वृश्चिक का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो तथा पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

23. सिंहलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

24. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य पाप ग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश गुरु पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

25. सिंहलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

26. सिंहलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश सूर्य निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय व द्वादश भाव ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

27. सिंहलग्न में मेष के गुरु एवं मीन के मंगल के परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से 'बालारिष्ठ योग' बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

28. सिंहलग्न में लग्नस्थ सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो लग्न से दूसरे एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्न में एकाधिक शुभ ग्रहों की युति हो तो ऐसे जातक की आयु के 47वें वर्ष में मृत्यु अस्त्र-शस्त्र एवं विस्फोटक सामग्री से होती है।

29. सिंहलग्न में सूर्य मकर का एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

30. सिंहलग्न के दूसरे घर कन्या राशि में राहु+शुक्र+सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा कुछ समय बाद स्वयं भी मर जाता है।

31. सिंहलग्न के प्रथम भाव में ही सूर्य+शनि+राहु+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र गुजर जाता है।

32. सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो तथा सातवें शुक्र हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

33. सिंहलग्न के द्वादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृ घातक' होता है।

34. सिंहलग्न के नवम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृ घातक' होता है।

35. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में शनि एवं चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

36. सिंहलग्न में चंद्रमा पाप ग्रह के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

37. सिंहलग्न में षष्टेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

38. सिंहलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेतबाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

सिंहलग्न और धनयोग

सिंहलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धन प्रदाता ग्रह बुध होता है। धनेश बुध की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, बुध एवं धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है इसके अतिरिक्त लग्नेश सूर्य, पंचमेश गुरु, भाग्येश मंगल की अनुकूल स्थितियां सिंहलग्न वालों के लिये धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

वैसे सिंहलग्न के लिये शनि, बुध परम पापी व मुख्य मारकेश का काम करेगा। चंद्रमा साहचर्य से अशुभ फल देगा। सूर्य शुभ फलदायक है। सुखेश व नवमेश मंगल अति शुभ कारक है।

शुभ योग– गुरु+मंगल, मंगल+सूर्य

अशुभ योग– 1. गुरु+शुक्र, 2. मंगल+शुक्र, 3. सूर्य+शनि

निष्फल योग–1. मंगल+शनि, 2. गुरु+शुक्र, 3. गुरु+शनि

सफल योग– 1. सूर्य+मंगल 2. सूर्य+गुरु, 3. मंगल+गुरु

राजयोग कारक–गुरु व मंगल

लक्ष्मी योग–बुध द्वितीय, नवम या एकादश में सूर्य या शुक्र सप्तम में, गुरु पंचम में।

विशेष योगायोग

1. सिंहलग्न में बुध, मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।
2. सिंहलग्न में बुध, शुक्र के घर में तथा शुक्र, बुध के घर में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा खूब धन कमाता है।

3. सिंहलग्न में मंगल मेष या वृश्चिक राशि का हो तो जातक अल्प प्रयत्न से ही बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले में भाग्यशाली होता है।
4. सिंहलग्न में बुध मंगल के घर में तथा मंगल बुध के घर में अर्थात् बुध, मेष व वृश्चिक राशि में हो तथा मंगल मिथुन या कन्या राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। लक्ष्मी चेरी की तरह उसकी दासी बनी रहती है।
5. सिंहलग्न में शुक्र यदि केंद्र-त्रिकोण में हो तथा बुध स्वगृही होकर मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर व्यक्ति धीरे-धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है।
6. सिंहलग्न में सूर्य हो तथा गुरु एवं मंगल से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है तथा धनशाली व्यक्तियों में अग्रगण्य होता है।
7. सिंहलग्न में पंचमस्थ गुरु स्वगृही हो तथा लाभ स्थान में चंद्र, मंगल हो तो जातक महालक्ष्मीवान होता है।
8. सिंहलग्न हो, पंचम गुरु तथा लाभ स्थान में बुध स्वगृही हो तो महालक्ष्मी योग बनता है। ऐसा जातक लक्षाधिपति होता है।
9. सिंहलग्न में सूर्य, मिथुन राशि में हो तथा बुध लग्न में सिंह राशि में हो तो जातक 33 वर्ष की आयु में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुये स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
10. सिंहलग्न हो, लग्नेश सूर्य, धनेश बुध, भाग्येश मंगल अपनी-अपनी उच्च व स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।
11. सिंहलग्न के द्वितीय स्थान में राहु, शुक्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक अरबपति होता है।
12. सिंहलग्न में धनेश बुध यदि छठे, आठवें और बारहवें स्थान में हो तो ''धनहीन योग'' की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। जातक को सदैव रुपयों की कमी बनी रहती है। इस योग की निवृत्ति हेतु गले में अभिमंत्रित ''बुध यंत्र'' धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो ''बुध यंत्र'' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
13. सिंहलग्न में धनेश बुध यदि आठवें हो तथा सूर्य यदि लग्न में हो तो जातक को भूमि में गढ़े हुये धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिलता है पर जातक के पास रुपया नहीं टिकता।

14. लग्नेश व द्वितीयेश यदि तुला राशि में हो तो जातक को भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है और जातक भाइयों द्वारा कमाया गया धन भोगता है।

15. शुक्र सूर्य के नवांश में हो तो जातक ऊन, दवा, घास, धान, सोना, मोती आदि के व्यापार से अर्थ उपार्जित करता है।

16. लग्न में गुरु, 10वें बुध या 4-7वें केन्द्र स्थानों में बुध एवं उसे नवमेश देखता हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।

17. राहु वृष राशि का हो, शनि लाभ भाव में हो तथा भाग्येश उसे देख रहा हो एवं लग्नेश नीचस्थ ग्रह से युत न हो तो जातक आनंदमय जीवन व्यतीत करता है। जातक को आर्थिक चिन्ता कभी नहीं रहती।

18. मंगल उच्च का हो उसे सूर्य, चंद्र व गुरु देखते हों तो जातक को पूर्ण वाहन सुख, पारिवारिक एवं आर्थिक सुख मिलता है।

19. चंद्रमा व शनि दशम भाव में हो या सुख स्थान में हों तो ब्रह्माण्ड योग होता है। जातक अतुल संपदा प्राप्त करता है।

20. चंद्रमा मकर का तथा चंद्रमा के साथ सूर्य हो, उसे शनि देखे तो जातक दुःखी, परेशान, चिन्तित व दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।

21. लग्नेश लग्न में हो तथा दशमेश चतुर्थ भाव में एवं चतुर्थ भाव का स्वामी दशम भाव में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है। जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।

22. सूर्य, मंगल, बुध आय भवन में मिथुन राशि में स्थित हो तो जातक धनाढ्य होता है।

23. बुध पंचम भाव, एकादश भाव या दूसरे भाव में हो तथा सिंहलग्न हो तो जातक को यकायक अर्थ लाभ होता है।

24. सिंहलग्न हो तथा शुक्र, गुरु कहीं भी एक साथ बैठ जायें तो जातक को लखपति होने पर भी कंगाल बनना पड़ता है। यदि शुक्र, गुरु, बुध तीनों मेषस्थ हों तो कुबेर को भी कंगाल होना पड़ता है।

25. अष्टमेश गुरु 4, 5, 9, 10 स्थानों में हो तथा लग्नेश निर्बल हो तो जातक दिवालिया होता है।

26. सिंहलग्न में मंगल मेष या वृश्चिक राशि में हो तो ''रूचक योग'' बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

27. सिंहलग्न में सुखेश मंगल, लाभेश बुध नवम भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

28. सिंहलग्न में गुरु+चंद्र की युति कन्या, वृश्चिक, धनु या मेष राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन प्राप्त होता है।

29. सिंहलग्न में धनेश बुध अष्टम में एवं अष्टमेश गुरु धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

30. सिंहलग्न में तृतीयेश शुक्र लाभ स्थान में एवं लाभेश बुध तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

31. सिंहलग्न में बलवान बुध के साथ यदि चतुर्थेश मंगल की युति हो तो व्यक्ति को माता, नौकर, वाहन, भूमि एवं भवन के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

32. सिंहलग्न में यदि बलवान बुध के साथ पंचमेश गुरु हो तथा द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

33. सिंहलग्न में बलवान बुध की यदि षष्टेश शनि से युति हो तथा धन भाव मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

34. सिंहलग्न में बलवान बुध की सप्तमेश शनि से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

35. सिंहलग्न में बलवान बुध की नवमेश मंगल से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी अनुबन्ध (ठेके) से काफी रुपया कमाता है।

36. सिंहलग्न में बलवान बुध की दशमेश शुक्र से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा सम्पादित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

37. सिंहलग्न में दशम भवन का स्वामी शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पाता, उसे धन की सदैव कमी बनी रहती है।

38. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो तथा धनेश बुध निर्बल हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

39. सिंहलग्न के धन भाव में पाप ग्रह बैठा हो तथा लाभेश बुध यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

40. सिंहलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्र यदि गुरु से छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

41. सिंहलग्न में धनेश बुध यदि अस्त हो, नीच राशि (मीन) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान मे कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता ही नहीं।

42. सिंहलग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत एवं पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

43. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु वक्री होकर कहीं बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अत: सावधान रहें।

44. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत (मकर) या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

सिंहलग्न और विवाह योग

1. सप्तम भाव में मकर का गुरु हो तो जातक को स्त्री का सुख अल्प ही मिलता है।
2. गुरु से केन्द्र में शुक्र और लग्नेश हों और नवम भाव का स्वामी बलवान हो तो जातक दीर्घायु, धनी, गुणी, चतुर, रोग-भय से रहित, भूमि, सुन्दर स्त्री से युक्त, उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है।
3. सप्तमेश शुभ ग्रह की राशि में हो तथा शुक्र अपनी उच्च की राशि में हो तो जातक का विवाह नौ वर्ष की अवस्था में होता है।
4. सिंहलग्न में शनि लग्नस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
5. सिंहलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय भाव में या द्वादश भाव में सूर्य हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
6. सिंहलग्न में शनि छठे हो, सूर्य आठवें हो तथा शुक्र बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
7. सिंहलग्न में सूर्य, शनि के साथ शुक्र भी हो, सूर्य कमजोर या नीच का हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. सिंहलग्न में शुक्र लग्न या द्वादश स्थान में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. सिंहलग्न में राहु या केतु हो, शुक्र मिथुन, सिंह, कन्या, धनु (वन्ध्या) राशिगत हो तो जातक का विवाह विलम्ब से होता है तथा जातक को जीवन साथी से तृप्ति नहीं मिलती।
10. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

11. सिंहलग्न में द्वितीयेश बुध अस्त हो, द्वितीय भाव में कोई ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

12. सिंहलग्न में सप्तमेश शनि वक्री हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं। जातक का विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

13. सिंहलग्न में चंद्रमा यदि स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अक्षतयोनि होती है।

14. सिंहलग्न में शनि सातवें हो, शुभ ग्रह उसे न देखते हों तो ऐसी स्त्री का पति बूढ़ा तथा पापी होगा।

15. सिंहलग्न में षष्टेश शनि, मंगल के साथ द्वितीय भाव (कन्या राशि) में अथवा एकादश भाव (मिथुन राशि) में हो तो ऐसा जातक स्त्री सहवास के योग्य नहीं होता अर्थात् नपुंसक होता है।

16. सिंहलग्न में चंद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की होती है।

17. सिंहलग्न में यदि सूर्य, मंगल, गुरु, चंद्र, बुध, शुक्र, शनि बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।

18. सिंहलग्न में चंद्र और शुक्र लग्नस्थ हो तथा पंचम स्थान पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो वह नारी बन्ध्या होती है।

19. सिंहलग्न में सप्तमेश शनि स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक या कुम्भ) में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है।

20. सिंहलग्न में स्वगृही सूर्य लग्न में अष्टमेश गुरु के साथ हो तो "द्विभार्या योग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

21. सिंहलग्न में बुध, शुक्र और शनि ये तीनों यदि दशम भाव में हो तो ऐसा पुरुष व्यभिचारी होता है।

22. सिंहलग्न में सप्तमेश शनि यदि द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों से संभोग करता है।

23. सिंह का सूर्य लग्न में एवं सातवें भाव में शनि हो तो ऐसे जातक का दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहता है। जातक की अपने जीवन साथी से विचार धारा बिलकुल नहीं मिलती। इसके विपरीत सूर्य सातवें और शनि लग्न में हो तो भी यही योग बनता है।

❑❑❑

सिंहलग्न और संतान योग

1. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु यदि आठवें हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
2. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु अस्त हो या पाप ग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
3. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु लग्न में हो तथा मंगल या सूर्य से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक की प्रथम संतान पुत्र ही होगा।
4. सिंहलग्न में पंचमस्थ गुरु धनु राशि में हो तो जातक के पांच पुत्र होते हैं। यदि सूर्य भी साथ में हो तो छः पुत्र होंगे।
5. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु लग्न में हो एवं लग्नेश सूर्य पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद में लेकर पालता है।
6. सिंहलग्न में सूर्य+चंद्रमा हो तो तथा मंगल राहु व शनि से युत हो तो ऐसे जातक को मातृ शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
7. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
8. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु कमजोर हो राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान प्राप्त होती है।
9. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
10. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश गुरु पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।
11. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

12. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

13. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु की सप्तमेश शनि से युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. गुरु सिंहलग्न में हो एवं पंचम भाव पर दृष्टि होने से जातक के पुत्र अधिक होते हैं।

15. लग्न में पाप ग्रह, चतुर्थ में चंद्रमा, लग्नेश धनु राशि में पंचम भाव में हो तथा पंचमेश बलहीन हो तो जातक वंश विच्छेदक होता है।

16. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

17. पंचमेश गुरु निर्बल हो, लग्नेश सूर्य भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक के यहां सर्पदोष के कारण पुत्र संतति नहीं होती।

18. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्म नामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के यहां पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।

19. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृ दोष होता है तथा पितृ शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

20. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।

21. सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उससे आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

22. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को "इलाख्य" नामक सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

23. सिंहलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "अनपत्य योग" बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

24. पंचम भाव में मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वां संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं होती।

25. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो "अनगर्भा योग" बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

27. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "कुलवर्द्धन योग" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

28. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र संतान नहीं होता।

❑❑❑

सिंहलग्न और राजयोग

1. जिसका जन्म लग्न सिंह के पूर्णांश पर हो और लग्न में स्वगृही सूर्य पूर्णांश पर हो, गुरु स्वगृही पंचम स्थान में हो, उच्च का मंगल शत्रु भाव में हो, स्वगृही शनि स्त्री स्थान में हो और उच्चाभिलाषी चंद्रमा मेष का भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
2. सिंह का लग्न में गुरु, कन्या या नीच का शुक्र दूसरे या धन भाव में, मिथुन का शनि पराक्रम में और स्वक्षेत्री वृश्चिक का मंगल भी यदि चतुर्थ हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
3. उच्च का शुक्र, उच्च का मंगल तथ शनि चंद्रमा कन्या के धन भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
4. सिंह का गुरु लग्न में हो और शेष सभी गृह पराक्रम या तृतीय, पंचम, छठे तथा द्वादश भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
5. लग्न में सूर्य, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में मंगल तथा पंचम भाव में गुरु हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
6. भाग्य स्थान में मेष का सूर्य, राज्य स्थान में वृष का चंद्रमा, लाभ स्थान में मिथुन का बुध और कुंभ का शनि सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
7. उच्च का बुध धन स्थान में, धन का गुरु पुत्र भाव में, मेष का मंगल भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
8. वृष का शुक्र कर्म स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
9. सिंह का सूर्य लग्न में, वृश्चिक का मंगल चतुर्थ में, कुम्भ का शनि सप्तम और वृष राशि का शुक्र दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।

10. सिंह का सूर्य लग्न में, धन का गुरु पंचम में, कुम्भ का शनि सप्तम में, मेष का मंगल भाग्य स्थान में और वृष का चंद्रमा राज्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।

11. उच्च का सूर्य नवम स्थान में हो, उच्च का शनि तीसरे स्थान में हो, उच्च का मंगल छठे भाव में हो और वृष का स्वगृही शुक्र यदि दशम स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

12. यदि सिंह का स्वगृही सूर्य लग्न में पूर्णांश में बलवान हो और धन में रुप गुरु स्वगृही, मंगल के साथ पंचम स्थान में हो तो मनुष्य बहुत धनवान होता है।

13. यदि सिंहलग्न में स्वगृही सूर्य के साथ चंद्रमा और गुरु बैठे हों, कन्या में उच्च का बुध नीच के शुक्र के साथ दूसरे स्थान में बैठा हो, स्वगृही कुम्भ का शनि सप्तम में हो और कर्क में नीच का मंगल द्वादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

14. सिंह का गुरु, शुक्र, स्वगृही सूर्य के साथ लग्न में हो, कन्या का बुध, मंगल के साथ दूसरे भाव में हो, कुम्भ का स्वगृही शनि सप्तम स्थान में और कर्क का स्वगृही चंद्रमा द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य का भाग्योदय विदेश में होता है।

15. यदि सिंहलग्न वाले मनुष्य की जन्मपत्री में मेष या उच्च का सूर्य भाग्य स्थान में हो, वृष में उच्च का चंद्रमा राज्य स्थान में हो और मिथुन का राहु लाभ स्थान में हो तो वह मनुष्य सुप्रसिद्ध राज्याधिकारी होता है। जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

16. यदि लग्न में सिंह का सूर्य हो, धन का गुरु पंचम हो, नवम स्थान में मेष का चंद्रमा, छठे स्थान में मकर का मंगल हो और सप्तम स्थान में कुम्भ का शनि हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

17. लाभेश नवम भाव में दशमेश से युक्त हो तो जातक आई.ए.एस. ऑफीसर बनता है।

18. शुक्र कन्या का द्वितीय भाव में हो व लग्नेश मेष का हो तो जातक गुणी, राज्य पूज्य व उच्च शासनाधिकारी होता है।

19. नवमेश जहां स्थित हो, उसका नवांशेश चौथे या 5वें भाव में हो तो रुद्र योग होता है। जातक उच्च पद की प्राप्ति करता है।

20. गुरु कर्क का हो, गुरु का नवांशपति त्रिकोण में हो या उच्च का या स्वगृही हो, बलवान हो और लग्नेश भी बली हो तो जातक राज्य में उन्नति करता है व दूसरों पर प्रभाव डालता है।

21. गुरु, लाभेश परमोच्च होकर द्वितीय स्थान में हो और दशमंश से दृष्ट हो तो भेरियोग होता है। जातक के पास कई हाथी, घोड़े होते हैं। सज्जन उसके आश्रित रहते हैं तथा 34 वर्ष की आयु में जातक का भाग्योदय होता है।

22. सिंहलग्न में जन्म समय में सिंह, वृष, कन्या, कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से सम्पन्न होता है। राहु उच्च में हो तो हाथी, घोड़ा, मनुष्य तथा नाव की सवारी वाला, जमीन वाला, पंडित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है।

23. सिंह में गुरु, तुला, कर्क, धनु, मकर में शेष सब ग्रह हों तो जातक प्रान्तपति होता है।

❑❑❑

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में

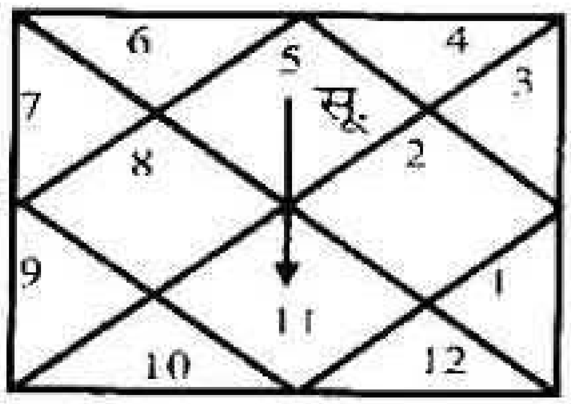

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देता। अपितु सूर्य की युति से अन्य गह शुभ फलदायक हो जायेंगे। प्रथम स्थान में सूर्य सिंह राशि में स्वगृही होगा। ऐसे जातक का चेहरा गोल, मुंह चौड़ा, ललाट चमकीला तथा व्यक्तित्व रौबदार होता है। जातक प्रबंधन और शासन कार्य में रुचि रखता है तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में शान समझता है। 'रविकृत राजयोग' के कारण जातक परम पराक्रमी, धनी एवं महत्वाकांक्षी होता है। यदि लग्न दस से सोलह अंशों के मध्य हो तो जातक IAS, RJS या उच्चाधिकारी होगा।

निशानी–जातक का जन्म पिता के लिए शुभ, जातक के शरीर के दायें भाग में लाल रंग का चिह्न होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक का जीवन साथी एकांकी स्वभाव का होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। जातक उत्तम स्वास्थ्य का सुख भोगेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या प्रात: सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है, व्ययेश चंद्र लग्नेश सूर्य के साथ होने से व्यक्ति को नेत्र पीड़ा रहेगी। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा।

2. **सूर्य + मंगल**–भाग्येश मंगल लग्न में सूर्य के साथ होने से जातक राजा या राजा से कम सौभाग्यशाली नहीं होगा।

3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। प्रथम भाव में सिंह राशि गत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर यह युति बहुत सार्थक है। सूर्य लग्न में होने से रविकृत राजयोग बनेगा। बुध यहां उच्चाभिलाषी है जो केन्द्र में कुलदीपक योग बनायेगा। इस योग के कारण ऐसा जातक धनवान एवं बुद्धिमान होगा। जातक उच्च पदस्थ राज्याधिकारी होगा। जातक समाज का बहुप्रतिष्ठित व्यक्ति एवं एक सफल व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु लग्न में सूर्य के साथ होने से जातक राजगुरु के पद पर होगा। बड़े-बड़े मंत्री राजनेता उससे सलाह लेंगे।

5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र, सूर्य के साथ लग्न में होने से व्यक्ति शक्तिशाली राजनेता होगा। जातक सरकारी अधिकारी होगा।

6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की षष्ठेश, सप्तमेश, शनि के साथ युति होगी। सूर्य यहां स्वगृही है। शनि मारकेश है। ऐसा जातक राजकीय ऐश्वर्य से युक्त होते हुए षड्यंत्र का शिकार होगा।

7. **सूर्य + राहु**–लग्न में यदि राहु के साथ सूर्य हो तो राज्य सुख में बाधा आयेगी।

8. **सूर्य + केतु**–लग्न में सूर्य के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

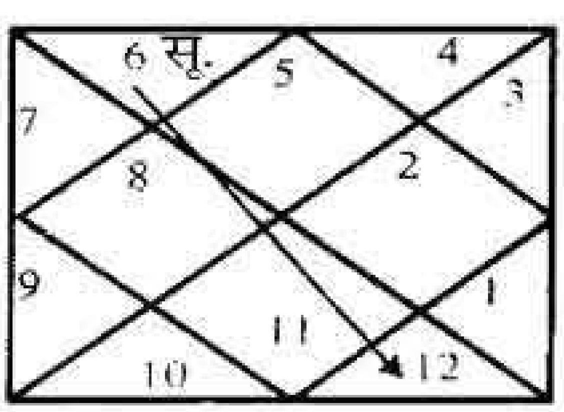

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। यह कभी अशुभ फल नहीं देता। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां द्वितीय स्थान में सूर्य कन्या (सम) राशि में होगा। जातक को विद्या, बुद्धि, धन-सम्पत्ति और कुटुम्ब का उत्तम सुख मिलेगा। जातक अपने पुरुषार्थ पराक्रम से यथेष्ठ धन कमायेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का दमन करने में सक्षम होगा।

निशानी–सूर्य नीचाभिलाषी होने से स्त्री व जमीन के झगड़े में धन का नाश होगा। जातक राजदरबार (राजनीति) में पद तो प्राप्त करता है पर शत्रुओं से घिरा रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में परिश्रम का लाभ मिलकर, जातक को धन की प्राप्ति होगी। कुटुम्ब का सुख मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति द्वितीय स्थान में होने से जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या प्रात: सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा के शत्रुक्षेत्री होकर लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को धन संग्रह के मामले में काफी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी।
2. **सूर्य + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल द्वितीय भाव में सूर्य के साथ होने से जातक अपने पराक्रम से बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। द्वितीय स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां उच्च का होगा। बलवान धनेश की लग्नेश के साथ यहां पर यह युति बहुत ही सार्थक है। जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा। जातक अपने पुरुषार्थ व बुद्धिबल से बहुत धन कमायेगा। जातक की आयु लम्बी होगी क्योंकि दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव पर होगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु धन के स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक प्रथम पुत्र के जन्म के बाद धनवान होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ सूर्य होने से जातक के परिजन धनवान व प्रतिष्ठित होंगे।
6. **सूर्य + शनि**–लग्नेश सूर्य की मारकेश शनि के साथ धन स्थान (कन्या राशि) में यह युति धन के लिए प्रारंभिक संघर्ष की द्योतक है। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक धनवान होगा।
7. **सूर्य + राहु**–सूर्य के साथ राहु होने से जातक अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए धन खर्च करेगा।
8. **सूर्य + केतु**–सूर्य के साथ केतु होने से धन का अपव्यय होगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

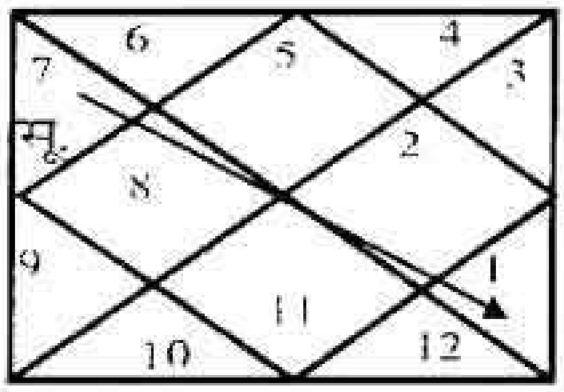

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य गह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां तृतीय स्थान में सूर्य तुला (नीच) राशि का होगा। तुला के दस अंशों में सूर्य परम नीच का होता है। जातक को सहोदर व पिता का सुख मिलता है। जातक अत्यन्त पराक्रमी होता है। मित्रों के सहयोग से जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि) में अपनी उच्च राशि पर होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के ज्येष्ठ भाई का नाश होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में में जातक का भाग्योदय होगा एवं पराक्रम बढ़ेगा। मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिल पायेगी।
2. **सूर्य + मंगल**–भाग्येश, सुखेश, मंगल के तृतीय स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक भाग्यशाली होगा एवं परिजनों-भाइयों के सहयोग से आगे बढ़ेगा।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। तृतीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलत: जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं महा पराक्रमी होगा। उसका भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। मित्र-परिजनों से जातक को सहायता मिलती रहेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक का सही विकास पुत्र जन्म के बाद होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–शुक्र की सूर्य के साथ युति से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

6. **सूर्य + शनि**–तृतीय स्थान में उच्च के शनि के साथ लग्नेश की युति पराक्रम भंग करायेगी। यहां 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा परन्तु कुख्यात होगा। जातक अपने बुरे कामों द्वारा पहचाना जायेगा।
7. **सूर्य + राहु**–सूर्य के साथ राहु भाइयों में विग्रह, कोर्ट-केस करायेगा।
8. **सूर्य + केतु**–सूर्य के साथ केतु होने से परिजनों में वैमनस्य रहेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में

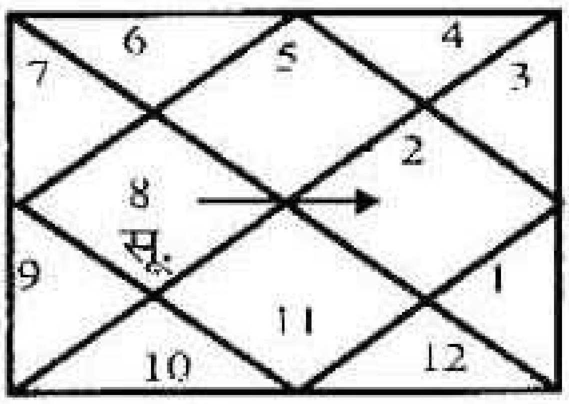

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य गह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां चतुर्थस्थ सूर्य वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। सूर्य की यह स्थिति आध्यात्मिक व भौतिक सुखों हेतु लाभकारी है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत सूर्य की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को राज-दरबार एवं सरकारी नौकरी से लाभ होता है।

निशानी–जातक को पिता की सम्पत्ति प्राप्त होगी। जातक विद्यावान होगा। परन्तु जातक की विशेष तरक्की 32 वर्ष की आयु के बाद होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक, सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी, नौकरी लगेगी एवं आध्यात्मिक लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति चतुर्थ स्थान में होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के लगभग होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा नीच का होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। जातक की माता बीमारी रहेगा या कम उम्र में गुजर जायेगी।
2. **सूर्य + मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल सूर्य के साथ 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान सुख-वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। चुतर्थ भाव में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध के केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठ कर दोनों ग्रह दशम स्थान को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली, सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति,

उत्तम वाहन एवं उत्तम भवन का सुख मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु सूर्य के साथ केन्द्र में होने से जातक शिक्षित व सभ्य होगा। जातक की संतान भी पढ़ी-लिखी होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र केन्द्र में सूर्य के साथ होने से जातक का जीवन सुख-वैभव से परिपूर्ण होगा।
6. **सूर्य + शनि**–चतुर्थ स्थान में लग्नेश व मारकेश शनि की युति जातक की माता को लाईलाज बीमारी से ग्रसित करेगी। माता की मृत्यु के बाद जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के साथ केन्द्र में हो तो जातक के माता-पिता बीमार रहेंगे।
8. **सूर्य + केतु**–सूर्य के साथ केतु होने से घर के सुख में बाधा रहेगी।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

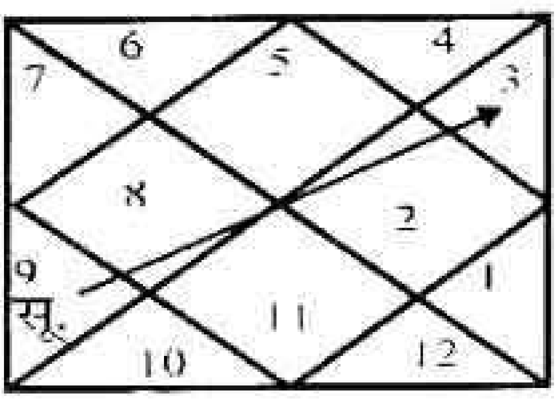

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां पंचम स्थान में सूर्य धनु (मित्र) राशि में होगा। जातक आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं व्यवसायिक दृष्टि से उन्नत होगा। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि (Educational Degree) प्राप्त करेगा। जातक तंत्र मंत्र एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश स्थान (लाभ-भाव) मिथुन राशि पर होगी। फलतः जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।

निशानी–जातक इष्टबली होगा। उसके पुत्र जरूर होगा। जातक को कोर्ट-कचहरी में सदैव विजय मिलेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। जातक को धन-सम्पत्ति एवं संतान की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र-सूर्य युति पंचम स्थान में होने से जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 12 के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा,

लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक स्वयं शिक्षित होगा तथा उसकी संतति भी शिक्षित व सभ्य होगी।

2. **सूर्य + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल पंचम स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक को पुत्र संतति से लाभ होगा।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। पंचम भाव में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध का स्वयं का घर है। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक आध्यात्मिक विद्या तंत्र-ज्योतिष इत्यादि का जानकार होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु, सूर्य के साथ होने से जातक के पुत्र पराक्रमी होंगे।
5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश, शुक्र पंचम स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक के पुत्र-पुत्री राज्य कर्मचारी होंगे।
6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के पंचम स्थान में लग्नेश+षष्टेश की युति जातक की संतान के लिए कष्टदायक है। एकाध बालक की अकाल मृत्यु, गृहस्थ सुख में अनबन की स्थिति बनायेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **सूर्य + राहु**–सूर्य यहां राहु के साथ होने से विद्या व पुत्र संतति में बाधा पहुंचाता है।
8. **सूर्य + केतु**–सूर्य यहां केतु के साथ होने से गर्भपात कराता है।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

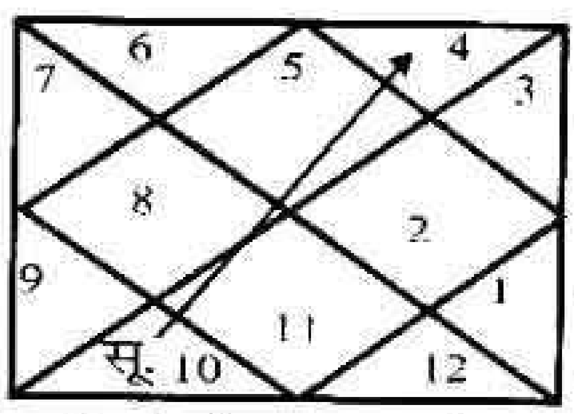

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य गह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां छठे स्थान में सूर्य मकर (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक को किसी भी काम में प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी। जातक महत्त्वाकांक्षी व घमंडी होगी।

दृष्टि–षष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः व्यर्थ की यात्राओं में समय नष्ट होगा।

निशानी—जातक के गुप्त शत्रु जरूर होंगे। जातक के जन्म के समय पिता घर से बाहर होगा। जातक का जन्म प्राय: ननिहाल या अस्पताल में होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में थोड़ी परेशानी आयेगी। जातक के शरीर पर रोग का प्रकोप हो सकता है। शत्रु पीड़ा पहुंचा सकते हैं।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति छठे स्थान में होने से जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा छठे स्थान में लग्नेश के साथ होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा परन्तु उसे राज सरकार से वांछित सहयोग नहीं मिलेगा।
2. **सूर्य + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल छठे स्थान में उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। फलत: जातक पराक्रमी होगा। जातक की माता-पिता से कम बनेगी।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। षष्टम भाव में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के छठे होने से 'लग्न-भंगयोग' बनेगा तथा बुध के कारण धनहीन योग, लाभभंग योग की सृष्टि होगी। फलत: यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं रहेगी। जातक को धन कमाने हेतु एवं भाग्योदय हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। रुपया पास में आयेगा पर टिकेगा नहीं। इस युति के कारण जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा पर उसका जीवन संघर्षशील रहेगा।
4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु छठे होने से विपरीत राजयोग बनेगा। जातक पराक्रमी होगा पर संतति को कष्ट रहेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।
6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। षष्टेश षष्टम में स्वगृही होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी एवं भौतिक सुखों से सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक का जीवन साथी जातक पर हावी रहेगा।
7. **सूर्य + राहु**—राहु छठे स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति में दिक्कतें आयेंगी।

8. **सूर्य + केतु**–सूर्य के साथ केतु होने से जातक उद्विग्न व परेशान रहेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

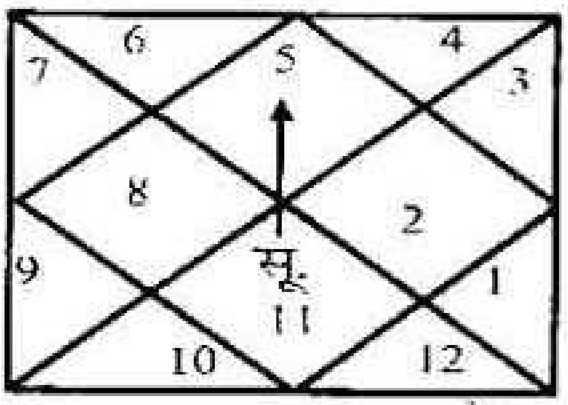

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य गह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां सप्तम स्थान में सूर्य कुंभ (शत्रु) राशि में होगा। फलत: जातक के पत्नी से थोड़े वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक एकान्त प्रिय होगा। ऐसे जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकती है। जातक अभिमानी होता है एवं प्राय: विरोधाभासी बयान दे देता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान अपने ही घर सिंह राशि पर होगी फलत: 'लग्नाधिपति योग' बना। जातक बहुत उन्नति करेगा तथा उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

निशानी–ऐसा जातक राजनैतिक क्षेत्र में अपने पराक्रम से आगे बढ़कर उच्च पद को प्राप्त करता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा। उसे उन्नति के उचित अवसर प्राप्त होंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति सातवें स्थान में होने से जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 6 से 8 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा सप्तम में पत्नी सुंदर देगा पर पत्नी खर्चीले स्वभाव की होगी। सूर्य के यहां बैठकर लग्न को देखने से परिश्रम पूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में जातक को सफलता मिलेगी। यहां यह युति शुभ फलदायक है।
2. **सूर्य + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल सूर्य के साथ केन्द्रस्थ होने से विवाह सुख में बाधक है तथा विलम्ब से विवाह कराता है।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। सप्तम स्थान में कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह यहां बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा एवं बुद्धि बल से आगे बढ़ेगा। उसको अल्प प्रयत्न से ही सफलता प्राप्त हो जायेगी। जातक

धनवान होगा। बुध केन्द्र में होने से कुलदीपक योग बनेगा जिसके कारण जातक कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।

4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु केन्द्रस्थ होकर सूर्य के साथ होने से जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी पर ससुराल पक्ष में खटपट रहेगी।

5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सप्तम स्थान में सूर्य का साथ होने से जातक को पत्नी सुन्दर देगा। पत्नी व ससुराल पक्ष धनी होगा।

6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न में सातवें स्थान में शनि मूलत्रिकोण कुंभ राशि का होकर सूर्य के स्थान को लग्नाधिपति योग करके लग्न को देखेगा। लग्नेश+सप्तमेश की यह युति यहां पर सार्थक है। जातक की पत्नी व ससुराल पक्ष धनी होगा। जातक जीवन में एक सफल व समृद्धशाली व्यक्ति होगा।

7. **सूर्य + राहु**—सप्तमस्थ राहु सूर्य के साथ जीवन साथी से बिछोह या तलाक करायेगा।

8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति विवाह सुख में परेशानी उत्पन्न करेगी।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में

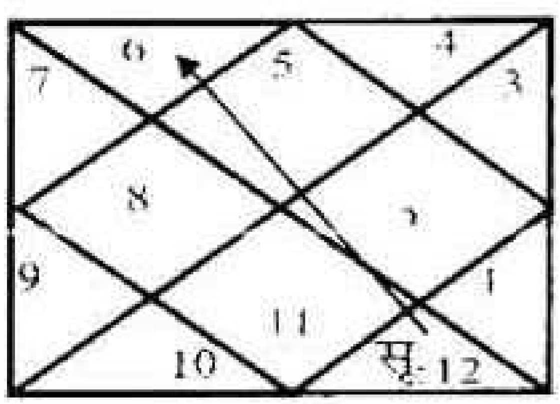

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां अष्टम स्थान में सूर्य मीन (मित्र) राशि में होगा। लग्नेश आठवें होने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का पौरुष निस्तेज होगा। उसे प्रत्येक कार्य में दिक्कतें आयेंगी। शत्रु उसे परेशान करते रहेंगे। जातक गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होगा एवं शत्रुओं को समाप्त करने में सफल रहेगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि) पर होने के कारण जातक धनी होगा। समाज में उसकी प्रतिष्ठा होगी। जातक जबान का पक्का होगा।

निशानी—सूर्य उच्चाभिलाषी होने से जातक को उजड़े हुए लोगों का धन मिलता है।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति आठवें स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 से 6 के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा अष्टम स्थान में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण लग्नभग योग बनेगा। ऐसा जातक धनवान, ऐश्वर्यवान तो होगा परन्तु राज सरकार में दण्डित होगा।
2. **सूर्य + मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल आठवें सूर्य के साथ होने से 'द्विविवाह योग' कराता है।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। अष्टम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां नीच राशि का होगा, जहां बैठकर बुध अपनी उच्च राशि धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक बुद्धिमान एवं वैभवशाली होगा। बुध के आठवें जाने से 'धनहीन योग', 'लाभभंग योग' बनेगा तथा सूर्य आठवें जाने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को परिश्रम का योग्य फल मिलेगा। ऐसी विषमता बनी रहेगी। परन्तु जातक का कोई काम धन की कमी से रुका नहीं रहेगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश व अष्टमेश गुरु अष्टम भाव में विपरीत राजयोग कराता है। पर पुत्र संतति की हानि होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र अष्टम स्थान में सूर्य के साथ होने से भाईयों से नुकसान करायेगा।
6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के अष्टम स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' शनि के कारण 'विवाहभंग योग' एवं हर्ष नामक विपरीत राजयोग यहां मुखरित हुए हैं। फलत: जातक का विलम्ब विवाह या दो विवाह हो सकते हैं। जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न व भौतिक संसाधनों से युक्त प्रबल पराक्रमी व्यक्ति होगा।
7. **सूर्य + राहु**–अष्टम स्थान में राहु सूर्य के साथ दो विवाह का योग बनाता है।
8. **सूर्य + केतु**–अष्टमस्थ सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति गृहस्थ सुख में बाधक है।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फल

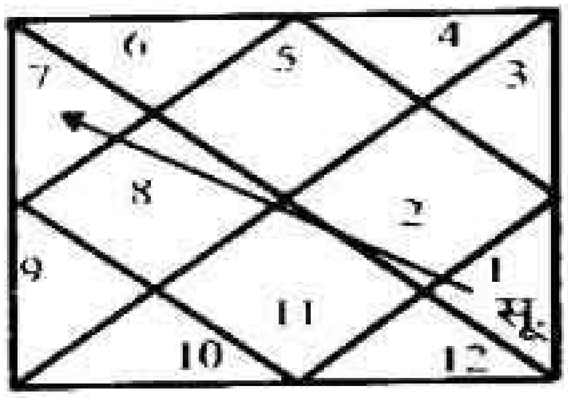

दायक हो जायेंगे। यहां नवम् स्थान में सूर्य मेष राशि में उच्च का होगा। मेष राशि में दस अंशों में सूर्य परमोच्च का होता है। ऐसा जातक परिवार, कुटुम्ब व स्वजाति का पोषक होता है। ऐसा जातक अपनी मेहनत से अपने भाग्य का सितारा चमकाता है। रविकृत राजयोग के कारण जातक लम्बी आयु पाने वाला यशस्वी एवं कुलश्रेष्ठ होता है।

दृष्टि–नवमस्थ सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक महान पराक्रमी होगा।

निशानी–जातक को पिता की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक अपनी खुद की सम्पत्ति अर्जित करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम् स्थान में होने से जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा भाग्य स्थान में उच्च के सूर्य के साथ होगा। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा। 'रविकृत राजयोग' के कारण जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। थोड़ा संघर्ष होते हुए भी जातक आगे बढ़ेगा।
2. **सूर्य + मंगल**–सूर्य के साथ मंगल हो तो 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक एक स्वतंत्र राजा की तरह धनवान व बलवान होता है। जातक अपने शत्रुओं का समूल नाश करता है।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। नवम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा एवं तृतीय स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बलवान लग्नेश की धनेश से युति यहां ज्यादा सार्थक सिद्ध होगी। फलतः जातक बुद्धिशाली धनवान एवं भाग्यशाली होगा। सूर्य की कृपा से जातक को 22 से 24 वर्ष की आयु के मध्य अच्छी लाईन मिल जायेगी। जातक उच्च राज्यधिकारी बन सकता है। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का पराक्रम, जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा। जातक समाज का बहु प्रतिष्ठित तथा गणमान्य व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ सूर्य होने से जातक के भाग्य का चरम विकास संतानोत्पत्ति के बाद होगा।

5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र, सूर्य के साथ होने से जातक को भाईयों, मित्रों से लाभ होगा।

6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के नवम स्थान में उच्च का सूर्य एवं नीच का शनि 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान महान शक्तिशाली एवं वैभवशाली होगा। जातक का जीवन साथी भी प्रबल पराक्रमी एवं पुरुषार्थी होगा।

7. **सूर्य + राहु**–सूर्य के साथ राहु होने से भाग्य में बिगाड़ होगा।

8. **सूर्य + केतु**–सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति भाग्योदय में विलम्ब करायेगी।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में

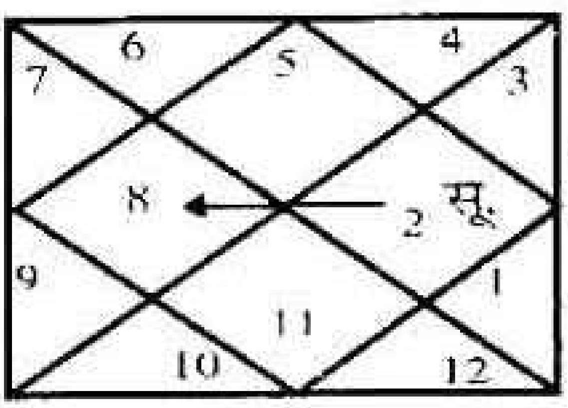

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां दशम स्थान में सूर्य वृष (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य यहां 'दिग्बली' होने से श्रेष्ठ फल देगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। जातक राजनीति के क्षेत्र नाम अर्जित करता है। जातक स्वस्थ एवं सुंदर शरीर का स्वामी होगा।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के पास उत्तम सवारी होगी।

निशानी–जातक का जन्म पिता के लिए शुभ होगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दसवें स्थान में होने से जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में उच्च का होने से 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। सूर्य केन्द्र में होने से व्यक्ति राजा के समान पराक्रमी होगा, परन्तु वाहन दुर्घटना में अंग-भंग होने के योग बनते हैं।

2. **सूर्य + मंगल**–भाग्येश, सुखेश, मंगल, सूर्य के साथ होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। बड़ी जमीन मिलेगी।

3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। दशम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। दोनों केन्द्रस्थ ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। फलत: जातक बुद्धिमान, धनवान, उत्तम वाहन व सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक शिक्षित होगा। उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का पराक्रम तेज रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश, गुरु दशम स्थान में होने से राज्य की नौकरी में बाधा पहुंचेगी।

5. **सूर्य + शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने पर 'मालव्य योग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा या राजपुरुष से कम नहीं होगा। जातक को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख मिलेगा।

6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के दशम स्थान में लग्नेश (सूर्य) एवं सप्तमेश (शनि) केन्द्र में होने से जातक विवाह के बाद सरकारी नौकरी या निजी व्यवसाय स्थापित करेगा। जातक के विचार पिता से नहीं मिलेंगे। नौकरी या रोजगार जन्म स्थान से दूर होगा।

7. **सूर्य + राहु**–दशम स्थान में राहु जातक को राजदण्ड दिलायेगा।

8. **सूर्य + केतु**–दशम स्थान में केतु सरकारी काम में बाधा पहुंचायेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में

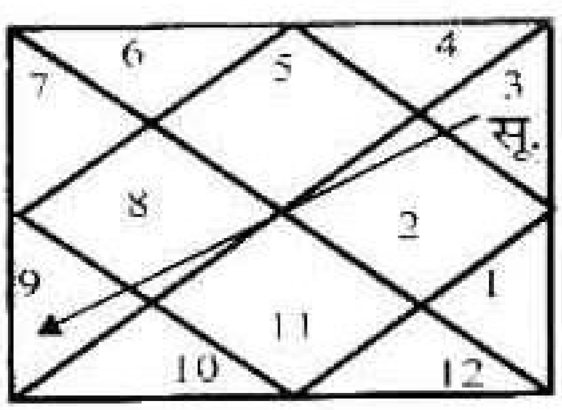

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो, कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां एकादश स्थान में सूर्य मिथुन (मित्र) राशि में होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा बुरे कामों से दूर रहने वाला होगा। जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा। जातक की महत्वाकांक्षा बढ़ी-चढ़ी होगी। जातक को नौकरी-व्यापार, धन-सम्पत्ति, पत्नी व संतान के उत्तम सुख की प्राप्ति होगी। जातक तंत्र-मंत्र द्वारा भी धन अर्जित करेगा।

निशानी–जातक 25 वर्ष की आयु में उत्तम वाहन सुख प्राप्त करेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत सूर्य पंचम भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक का एक पुत्र अवश्य होगा। पुत्र तेजस्वी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति की ओर आगे बढ़ेगा तथा उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति ग्यारहवें स्थान में होने से जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सुबह 10 से 12 के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक धनी होगा पर धन संग्रह में बाधा बनी रहेगी।
2. **सूर्य + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल लाभ स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक बड़ा व्यापारी होगा।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। एकादश स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिबल से अपना स्वयं का व्यापार उन्नत करेगा। जातक धनवान होगा। यह भी संभव है कि जातक बड़े उद्योग का स्वामी हो। ऐसा जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश बृहस्पति सूर्य के साथ होने से जातक के पुत्र उद्योगपति होंगे।
5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र लाभ स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक को मित्रों से एवं मिलने-जुलने वालों से लाभ होगा।
6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न के एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य, सप्तमेश शनि के साथ होने से जातक को पत्नी व संतान का पूर्ण सुख रहेगा। जातक सफल व्यवसायी या उद्योगपति होगा। जातक के उद्योग का विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य + राहु**—सूर्य के साथ राहु व्यापार-व्यवसाय में हानि करायेगा।
8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु व्यापार में नुकसान करायेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फल

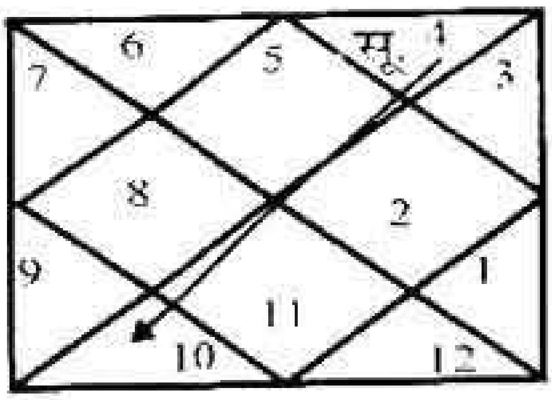

दायक हो जायेंगे। द्वादश स्थान में सूर्य कर्क (मित्र) राशि में होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'लग्नभंग योग' बनता है। जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा। जातक द्वारा की गई यात्राएं अनुपयोगी एवं निरर्थक साबित होंगी। जातक को राजपुरुषों से वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। जातक को दस्तकारी, भूमि, खजिन पदार्थों से लाभ होगा।

दृष्टि–व्यय भावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होंगे जो उसे पीड़ा पहुंचायेंगे।

निशानी–जातक की बाई आंख (Left eye) में पीड़ा रहेगी। आपरेशन होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति द्वादश स्थान में होने से जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा व्यय भाव में स्वगृही होने से विमल नामक 'विपरीत राजयोग' बना। लग्नेश बारहवें होने से 'लग्नभंग योग' बना। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा पर जन्म स्थान से दूर प्रदेशों में भाग्योदय होने का योग है।
2. **सूर्य + मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल बारहवें भाव में होने से भाग्योदय में बाधक है।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। द्वादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के बारहवें स्थान पर जाने से 'धनहीन योग', 'लाभभंग योग' की सृष्टि होगी। जबकि सूर्य के बारहवें स्थान पर जाने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। फलत: यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होते हुए धन संग्रह के प्रति चिंतित रहेगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश, गुरु बारहवें सूर्य के साथ होने से पुत्र द्वारा कीर्ति भंग होगी।

5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र बारहवें होने से नेत्र पीड़ा करायेगा। जातक को भाईयों से नुकसान होगा।

6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के द्वादश स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' शनि के कारण 'विमलभंग योग' तथा हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक धनी होगा। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी। जातक के पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक पिता के साथ भी कम रह पायेगा।

7. **सूर्य + राहु**–राहु बारहवें भाव में व्यर्थ की यात्राओं से राजदण्ड का संकेत देता है।

8. **सूर्य + केतु**–केतु बारहवें भाव में सूर्य के साथ होने से जेल जाने का भय बनायेगा।

❑❑❑

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में

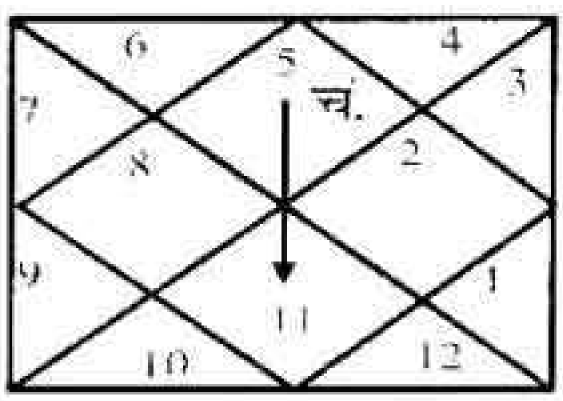

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां प्रथम स्थान में चंद्रमा सिंह (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक स्वयं सुंदर होगा एवं उसका जीवन साथी भी सुंदर होगा। जातक श्रृंगार प्रिय, बौद्धिक चातुर्य से परिपूर्ण, स्त्री और संतान सुख से युक्त होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी, फलत: जातक रंगीन मिजाज का होगा तथा अन्य स्त्रियों के प्रति आसक्त रहेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या प्रात: सूर्योदय के समय (6 से 8 के मध्य) होता है, व्ययेश चन्द्र लग्नेश सूर्य के साथ होने से व्यक्ति को नेत्र पीड़ा रहेगी। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां प्रथम स्थान सिंह राशि में दोनों ग्रह स्थित होकर चतुर्थ स्थान (वृश्चिक राशि), सप्तम स्थान (कुम्भ राशि) एवं अष्टम स्थान (मीन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अपने घर (वृश्चिक राशि) को देखने के कारण जातक को घर का मकान, वाहन सुख इत्यादि की प्राप्ति होगी पर जातक की उन्नति

विवाह के पश्चात् होगी। दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा खर्चकारी होगी, जबकि मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी।

3. **चंद्र+बुध**–धनेश बुध लग्न में व्ययेश चंद्रमा के साथ होने से जातक जो कमायेगा खर्च होता चला जायेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। लग्न में बैठकर दोनों शुभ ग्रह पंचम, सप्तम एवं भाग्य भवन को प्रभावित करेंगे। फलतः संतान पक्ष, पत्नी पक्ष एवं भाग्य पक्ष अपेक्षाकृत मजबूत रहेंगे। जो भी आप कमायेंगे खर्च होता चला जायेगा। फिर भी जीवन में धन की कमी से कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र की युति व्ययेश चंद्रमा के साथ लग्न में होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक राजनैतिक प्रभाव वाला होगा।
6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि लग्न में व्ययेश चंद्रमा के साथ होने से जातक के गृहस्थ सुख में बाधा पहुंचेगी।
7. **चंद्र+राहु**–व्ययेश चंद्रमा के साथ राहु लग्न में हो तो जातक की बुद्धि भ्रमित रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**–व्ययेश चंद्रमा के साथ केतु लग्न में हो तो जातक मानसिक तनाव में रहेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

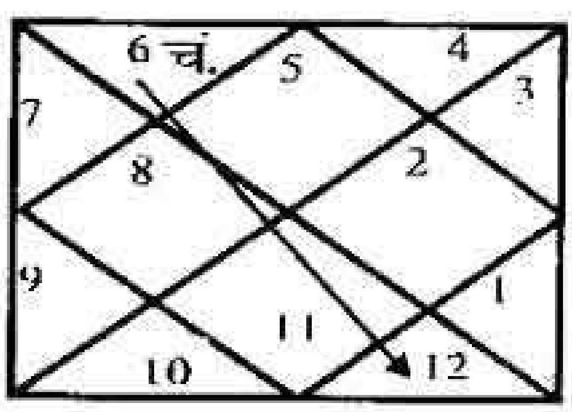

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचार्य से अशुभ फल देगा। द्वितीय स्थान में चंद्रमा कन्या राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। जातक वाक्पटु होगा। जातक मीठी व विनम्र वाणी बोलेगा पर ज्यादा धन एकत्रित नहीं कर पायेगा। जातक संगीत-साहित्य, कला, श्रृंगार व सौन्दर्य प्रिय होगा।

दृष्टि–धन भावगत चंद्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक गुप्त रोग से ग्रसित होगा। जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होंगे।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **चंद्र+सूर्य**-सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति द्वितीय स्थान में होने से जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या प्रात: सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को धन संग्रह के मामले में काफी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी।
2. **चंद्र+मंगल**-यहां द्वितीय स्थान में कन्या राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव (धनु राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं भाग्य भवन अपने घर मेष राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: '**लक्ष्मी योग**' पूर्ण रुप से फलीभूत होगा। ऐसा जातक धनवान, सौभाग्यशाली एवं दीर्घजीवी होगा। प्रथम पुत्र के जन्म के बाद जातक धनी होगा पर धन के स्थाई संग्रह हेतु संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।
3. **चंद्र+बुध**-धन स्थान में उच्च के धनेश की व्ययेश के साथ युति हो तो जातक अत्यधिक खर्च के कारण ऋणग्रस्त होगा।
4. **चंद्र+गुरु**-आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। धन स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम भाव, अष्टम भाव एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। जातक की आयु पूर्ण होगी। ऐसा जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने में पूर्ण सक्षम होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**-तृतीयेश, दशमेश शुक्र नीच का धनस्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ हो तो धन का संग्रह नहीं हो पायेगा।
6. **चंद्र+शनि**-षष्टेश, सप्तमेश शनि धन स्थान में व्ययेश चंद्र के साथ हो तो जातक का धन बीमारी में खर्च होगा।
7. **चंद्र+राहु**-जातक धैर्यहीन व कलहकारी होगा।
8. **चंद्र+केतु**-जातक का अपनी वाणी पर नियंत्रण नहीं रहेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा

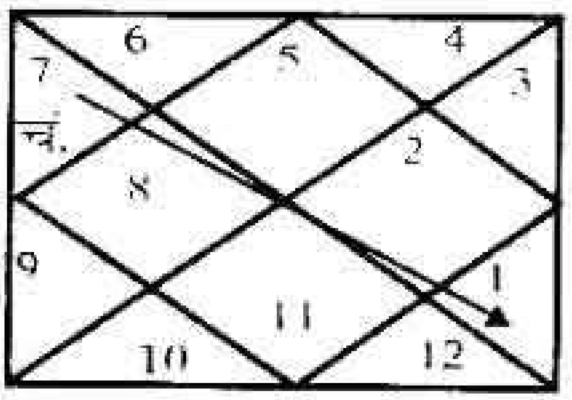

तुला (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को भाई बहनों का सुख उत्तम होगा। जातक भोग-विलास में रुचि रखने वाला 'सेक्स प्रेमी' होगा। जातक को स्त्री व संतान का सुख पूर्ण होगा। यात्राओं के द्वारा जातक का पराक्रम बढ़ेगा। विदेश-यात्रा भी होगी। आयात-निर्यात से लाभ मिलेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य स्थान (मेष राशि) पर होने के करण जातक भाग्यशाली होगा तथा इष्ट मित्रों की सहायता से आगे बढ़ेगा।

निशानी—शुक्र की राशि में चंद्रमा होने से जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ मिलेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में उत्तम फल मिलेंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिल पायेगी।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां तृतीय स्थान में तुला राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्ठि छठे भाव (मकर राशि), भाग्य भाव जो मंगल का स्वयं का घर है (मेष राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक धनवान, पराक्रमी एवं सौभाग्यशाली होगा। जातक की राजनीति में भी पहुंच होगी। जातक ऋण रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**—धनेश, लाभेश बुध के साथ व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में हो तो मित्रों में विवाद रहेगा। जातक मित्रों में धन उड़ायेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के तृतीय भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को पिता का धन मिलेगा। पत्नी व ससुराल पक्ष से लाभ होगा। व्यापार से भी लाभ होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक की रुचि जुए में होगी। जातक को कुसंगति व Drink-parties से बचना चाहिए।

6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि व्ययेश चंद्रमा के साथ तृतीय स्थान में होने से शत्रुओं एवं कोर्ट-कचहरी पर रुपया खर्च होगा।

7. **चंद्र+राहु**–व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में राहु के साथ हो तो भाईयों मे विवाद होगा।

8. **चंद्र+केतु**–व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में केतु के साथ हो तो परिजनों में मनमुटाव रहेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

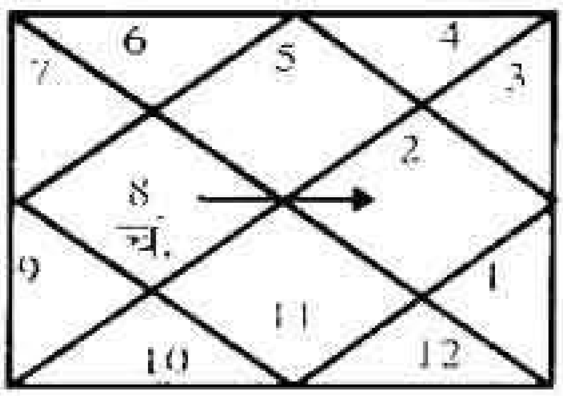

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा वृश्चिक (नीच) राशि में होगा। वृश्चिक राशि के तीन अंशों तक चंद्रमा परम नीच का होगा। चंद्रमा यहां अपनी राशि से पंचम स्थान पर होने के कारण उसका नीचत्व नष्ट हो गया है। चंद्रमा यहां शुभ फल देगा। ऐसे जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक उत्तम भवन का स्वामी होगा। जातक की माता की सम्पत्ति या माता का सुख मिलेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक का राजनीति में हस्तक्षेप रहेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक का भौतिक विकास होगा तथा उसे वाहन, भूमि एवं मकान का सुख मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति चतुर्थ स्थान में होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के लगभग होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा नीच का होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। जातक की माता बीमारी रहेगी या छोटी उम्र में गुजर जायेगी।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशिगत मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग', 'रूचक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हुई है। मंगल यहां दिक्बली भी है। फलत: 'महालक्ष्मी योग' मुखरित

हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव (कुंभ राशि), दशम भाव (वृष राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा महाधनी होगा। राज्य सरकार, (राजनीति) में जातक का प्रभाव होगा तथा वह व्यापार व्यवसाय से भी धन अर्जित करेगा।

3. **चंद्र+बुध**–धनेश, लाभेश बुध व्ययेश चंद्रमा के साथ चतुर्थ स्थान में माता को बीमारी दिलायेगा। यहां चंद्रमा नीच का होगा फलतः जातक की माता को लम्बी बीमारी होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। चतुर्थ स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक की आयु पूर्ण होगी। राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। खर्चीला स्वभाव जातक की कमजोरी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **चंद्र+शनि**–जातक की माता को कष्ट होगा। माता की या पत्नी की बीमारी में धन खर्च होगा।
7. **चंद्र+राहु**–व्ययेश चंद्रमा के साथ चतुर्थ स्थान में राहु होने से जातक की माता की मृत्यु अल्प आयु में होगी।
8. **चंद्र+केतु**–व्ययेश चंद्रमा के साथ केतु चतुर्थ स्थान में होने से घर के सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

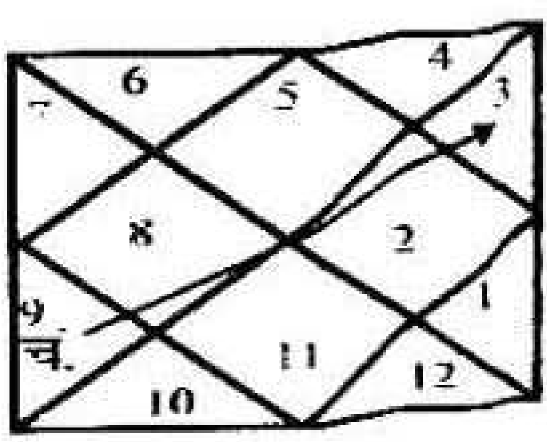

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां चंद्रमा पंचम स्थान में धनु (सम) राशि का होगा। जातक को विद्या का लाभ होगा तथा उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी। जातक को माता-पिता, भाई-बहन का सुख मिलेगा परन्तु पुत्र प्राप्ति हेतु तीर्थ-यात्रा, व्रत-अनुष्ठान का सहारा लेना होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को स्वतंत्र व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलकारी होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति पंचम स्थान में होने से जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा, लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक स्वयं शिक्षित होगा तथा उसकी संतति भी शिक्षित व सभ्य होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां पंचम स्थान में धनु राशि में बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः इस लक्ष्मी योग के कारण जातक व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा। जातक दीर्घजीवी होगा तथा ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**–व्ययेश चंद्रमा पंचम स्थान में बुध के साथ होने से जातक की प्रथम संतति का गर्भपात होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के पंचम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। पंचम स्थान में गुरु स्वगृही होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह नवम स्थान, एकादश भाव एवं लग्न भाव को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक को व्यक्तिगत सफलता मिलती रहेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–व्ययेश चंद्रमा के साथ तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम स्थान में होने से जातक को पुत्र संतति की अपेक्षाकृत कन्या संतति अधिक होगी।
6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि पंचम स्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ होने से संतति को लेकर आपरेशन होगा।
7. **चंद्र+राहु**–पंचम स्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ राहु होने से पुत्र संतति की हानि होगी।
8. **चंद्र+केतु**–पंचम स्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ केतु होने से गर्भपात, गर्भस्राव का भय रहेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में

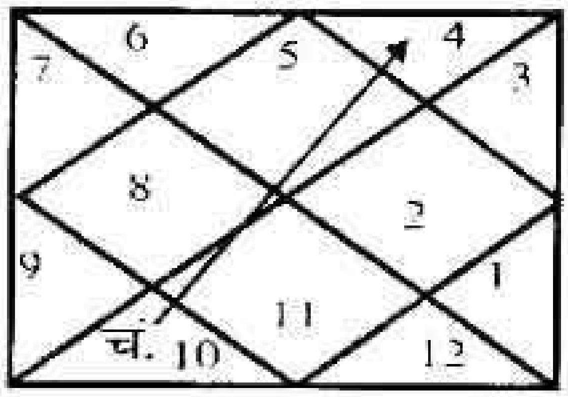

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां छठे स्थान में चंद्रमा मकर (सम) राशि में होगा। व्ययेश होकर चंद्रमा के छठे जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। फलस्वरूप जातक धनवान व ऐश्वर्यवान होगा। जातक को कार्य में अचानक सफलता मिलेगी।

दृष्टि–षष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव अपने ही घर कर्क राशि पर होगी। फलतः जातक के ऊपर ऋण व शत्रुओं का बोझ रहेगा। इस कारण जातक का आत्मबल भी कमजोर रहेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक भारी उतार-चढ़ाव महसूस करता हुआ उन्नति प्राप्त करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति छठे स्थान में होने से जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा छठे स्थान में लग्नेश के साथ होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा परन्तु उसे राजसरकार से वांछित सहयोग नहीं मिलेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां छठे स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होगा। मंगल की यह स्थिति 'सुखभंग योग' एवं 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करती है पर व्ययेश चंद्रमा के छठे जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि हुई है। अतः लक्ष्मी योग बना। ऐसा जातक संघर्ष के बाद धनी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (मेष राशि), व्यय भाव (कर्क राशि) एवं लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। निश्चय ही जातक भाग्यशाली, धनी होगा एवं व्ययशील (खर्चीली) प्रवृत्ति का स्वामी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–व्ययेश चंद्रमा के छठे होने से विपरीत राजयोग तो बना परन्तु धनेश, लाभेश बुध की स्थिति यहां होने से जातक धनी होते हुए भी कष्ट में रहेगा।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु-चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। छठे स्थान में गुरु नीच का होगा एवं 'संतानहीन योग' की सृष्टि करेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव, द्वादश भाव एवं धन भाव को देखेंगे। फलतः जातक को राजनीति में, नौकरी व व्यापार में धोखा मिलेगा। जातक के धन का अपव्यय होगा। पैसा उसके पास में नहीं टिकेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे स्थान में व्ययेश चंद्र के साथ हो तो जातक का पराक्रम भंग होगा। जातक को सरकारी दण्ड मिलेगा।

6. **चंद्र+शनि**—षष्ठेश शनि के छठे स्थान में स्वगृही होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी व वैभवशाली होगा पर दो पत्नी का योग बनता है। जातक का गृहस्थ सुख कमजोर रहेगा।

7. **चंद्र+राहु**—राहु के साथ चंद्रमा छठे स्थान में हो तो जातक के जीवन में गुप्त शत्रु उसे पीड़ा पहुचायेंगे।

8. **चंद्र+केतु**—केतु के साथ चंद्रमा छठे स्थान में हो तो जातक के गुप्त शत्रु होंगे।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में

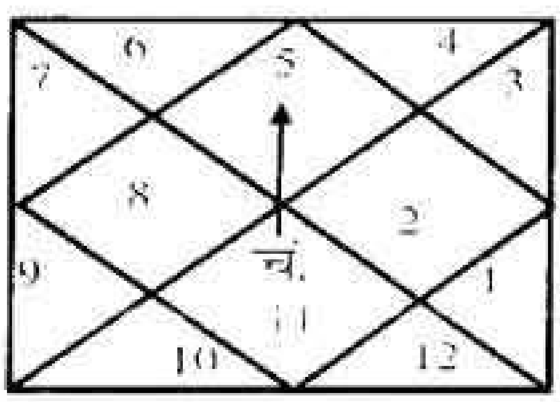

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य में शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य में अशुभ फल देगा। यहां सप्तम स्थान में चंद्रमा कुम्भ (सम) राशि में होगा। जातक की पत्नी सुंदर, रूपवान होगी परन्तु जातक स्वयं चिंतनशील, गंभीर एवं एकांतप्रिय स्वभाव का होगा। जातक अपने जीवन साथी पर धन खर्च करता है पर उसका पूर्ण सुख उसे नहीं मिलता।

दृष्टि—सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि) पर होगी, फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—द्वादशेश का सप्तम भाव में होना पाराशर ऋषि के अनुसार ठीक नहीं होता। ऐसा जातक जीवनसाथी के प्रति उद्विग्न (उदास) रहेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा ज्यादा शुभ फल नहीं देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—सिंहलग्न में चंद्र-सूर्य युति सातवें स्थान में होने से जातक का जन्म फाल्गुनी कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 6 से 8 बजे के मध्य होता है। व्ययेश

चंद्रमा सप्तम स्थान में होने से सुंदर पत्नी देगा पर पत्नी खर्चीले स्वभाव की होगी। सूर्य के यहां बैठकर लग्न को देखने से परिश्रम पूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। यहां यह युति शुभ फलदायक है।

2. **चंद्र+मंगल**–यहा सप्तम स्थान में कुम्भ राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि), लग्न भाव (सिंह राशि) एवं धन भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: 'लक्ष्मी योग' पूर्ण रूप से मुखरित हुआ। ऐसे जातक को हाथ में लिए गए प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक धनवान एवं साधन-सम्पन्न होगा। जातक राजनीति में प्रभाव रखने वाला महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा।

3. **चंद्र+बुध**–व्ययेश चंद्रमा के साथ धनेश, लाभेश बुध की युति सप्तम भाव में होने से वैवाहिक सुख में बाधक है।

4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। सप्तम भाव में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: विवाह के तत्काल बाद जातक की उन्नति होगी। उसका पराक्रम, जनसम्पर्क बढ़ेगा एवं उसे लाभ होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र की युति व्ययेश चंद्रमा के साथ सप्तम स्थान में जातक को पराक्रमी ससुराल देगी।

6. **चंद्र+शनि**–स्वगृही शनि सप्तम स्थान में 'शश योग' बनायेगा। जातक महाधनी होगा परन्तु गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।

7. **चंद्र+राहु**–व्ययेश चंद्र के साथ राहु होने पर जातक की पत्नी की अकाल मृत्यु होगी।

8. **चंद्र+केतु**–व्ययेश चंद्र के साथ केतु होने पर जातक को गृहस्थ सुख में बाधा आयेगी।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

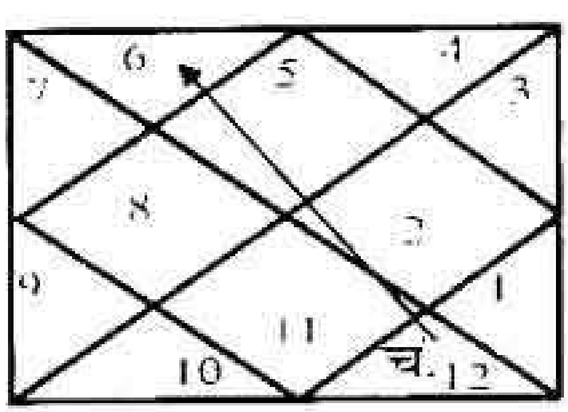

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मीन (सम) राशि में होगा। व्ययेश चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान होगा।

जातक कभी आस्तिक एवं कभी नास्तिक विचारों वाला होगा। कभी आध्यात्मिक एवं कभी भौतिक सुविधाओं पर जोर रहेगा। जातक का मन विचलित, मस्तिष्क अस्थिर विचारों वाला होगा।

दृष्टि–अष्टम भावगत चंद्रमा की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जिससे विद्या, बुद्धि, धन व कुटुम्ब सुख में वृद्धि होगी।

निशानी–चंद्रमा की निर्बलता के कारण जातक स्वयं अपने लिए परेशानियां उत्पन्न करता रहेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा अचानक लाभ भी दे सकती है। पर अनिष्ट फल अवश्य देगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति आठवें स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 से 6 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा के अष्टम में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण लग्नभंग योग बनेगा। ऐसा जातक धनवान, ऐश्वर्यवान तो होगा परन्तु राज सरकार से दण्डित होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यह दोनों ग्रह अष्टम स्थान मीन राशि में होंगे। मंगल की यह स्थिति 'सुखभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि करेगी। परन्तु व्ययेश चंद्रमा के अष्टम में जाने से 'सरल' नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होने से 'लक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि) एवं पराक्रम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलत: जातक व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा एवं महान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–अष्टम स्थान में चंद्र+बुध की युति से जातक को गुप्त बीमारी का भय रहेगा अथवा शल्य चिकित्सा का भय रहेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के अष्टम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। अष्टम स्थान में गुरु स्वगृही होगा। दोनों ग्रह यहां बैठने से 'संतान हीन योग' बनेगा। यदि ध्यान नहीं दिया गया तो विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी। खड्ढे में गिरे हुए ये दोनों ग्रह खर्च स्थान, धन स्थान एवं चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: धन का अपव्यय होगा। जातक को बढ़ते हुए खर्च के प्रति चिंता रहेगी। माता या वाहन को लेकर भी जातक का रुपया खर्च होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–अष्टम स्थान में शुक्र पराक्रम भंग करायेगा। जातक राजा से दण्डित होगा।
6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश शनि के आठवें जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक गुप्त रोग या गुप्त शत्रु द्वारा पीड़ित होगा। जातक धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
7. **चंद्र+राहु**–अष्टम स्थान में राहु 'द्विभार्या योग' बनाता है।
8. **चंद्र+केतु**–अष्टम स्थान में चंद्रमा के साथ केतु शल्य चिकित्सा का योग बनाता है।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

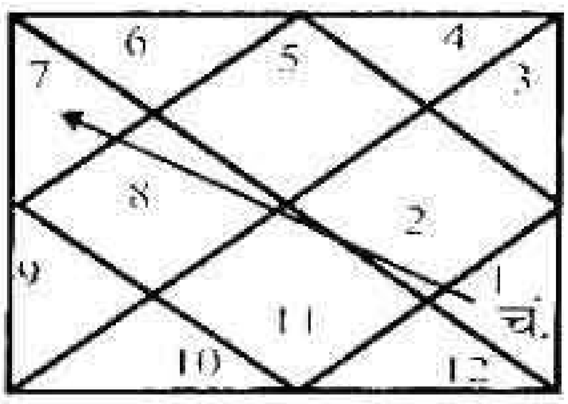

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां नवम स्थान में चंद्रमा मेष (मित्र) राशि में होगा। फलत: जातक ऊर्जावान होगा। जातक को विद्या, धन, सम्पत्ति, स्त्री, संतान, व्यापार-व्यवसाय का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक गणित, वेद-विद्या, कम्प्यूटर लाईन का ज्ञाता होगा। जातक अपने द्वारा अर्जित ज्ञान राशि से यथेष्ट धन कमाता है।

दृष्टि–नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगी। कुटुम्ब-परिवार का पोषक होगा।

निशानी–जातक को पिता की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी। जातक में भरपूर उत्साह, उमंग एवं महत्वाकांक्षा होगी।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवमे स्थान में होने से जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा भाग्य भवन में उच्च के सूर्य के साथ होगा। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। 'रविकृत राजयोग' के कारण जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। थोड़ा संघर्ष होते हुए भी जातक आगे बढ़ेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां मेष राशिगत मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा उच्चाभिलाषी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (कर्क राशि), पराक्रम भाव (तुला राशि) एवं चतुर्थ भाव जो कि स्वयं मंगल का मुखरित हुआ। ऐसा जातक अति

सौभाग्यशाली एवं धनवान होगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी, गांव का मुखिया या प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करेगा। ऐसा जातक व्ययशील (उदार) प्रवृत्ति वाला होगा।

3. **चंद्र+बुध**–व्ययेश चंद्रमा के साथ धनेश की युति, जातक को माता-पिता से धन दिलवायेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के नवम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। नवम स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह, लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान जो कि गुरु का स्वयं का घर है, पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: प्रथम संतति के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा। जातक के मित्र एवं शुभचिंतकों की संख्या में अद्वितीय वृद्धि होगी। राजनीति में आपकी जीत होगी एवं संतान आज्ञाकारी होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि व्ययेश के साथ भाग्य स्थान में हो तो जातक को भाग्योदय के अवसर मित्रों की मदद से प्राप्त होते रहेंगे।
6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि भाग्य स्थान में व्ययेश के साथ हो तो जातक का जीवन साथी उड़ाऊ प्रवृत्ति का होगा।
7. **चंद्र+राहु**–भाग्य स्थान में राहु व्ययेश चंद्र के साथ होने से भाग्य में लगातार रुकावटें आती रहेंगी।
8. **चंद्र+केतु**–भाग्य स्थान में केतु यदि व्ययेश चंद्र के साथ हो तो जातक विदेश में धन कमायेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

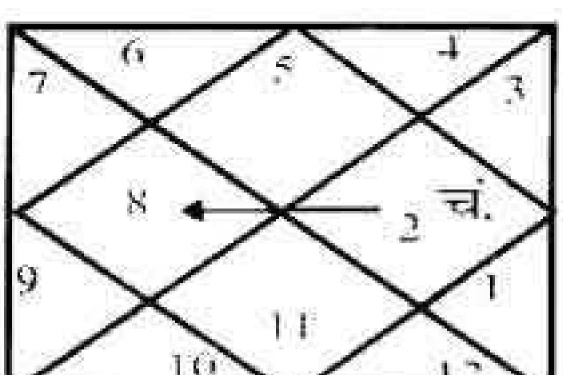

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां दशम स्थान में चंद्रमा वृष राशि में उच्च का होगा। वृष राशि के तीन अंशों तक चंद्रमा परमोच्च का होगा। ऐसे जातक शिक्षित होते हैं। यामिनीनाथ योग के कारण जातक ऐश्वर्यवान होगा। ऐसे जातक कुशाग्र बुद्धि के कारण डॉक्टर, वकील, राजनेता एवं ज्योतिषी के रूप में आध्यात्मिक प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। रत्न, होटल, आयात-निर्यात, वस्त्र-व्यवसाय, उद्योग व हैण्डीक्राफ्ट के व्यापार में लाभ की संभावना ज्यादा प्रबल है।

दृष्टि–दशम भावगत चंद्रमा की दृष्टि सुख स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक को घर-सम्पत्ति, माता-पिता एवं वाहन का सुख मिलता है।

निशानी–ऐसे जातक को पिता का स्वल्प सुख मिलता है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक की व्यापारिक-व्यवसायिक उन्नति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दसवें स्थान में होने से जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में उच्च का होने से 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। सूर्य केन्द्र में होने से व्यक्ति राजा के समान पराक्रमी होगा, परन्तु वाहन दुर्घटना में अंग-भंग होने के योग बनते हैं।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां वृष राशिगत केन्द्रवर्ती चंद्रमा उच्च का होगा। अत: यहां 'यामिनी नाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिक्बली होगा तथा 'कुलदीपक योग' बनायेगा। फलत: यहां 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक महाधनी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि), चतुर्थ भाव जो मंगल का स्वयं का घर है (वृश्चिक राशि) एवं पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का तथा उत्तम वाहन का स्वामी होगा। जातक का सही अर्थों में भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–धनेश यदि दशम भाव में व्ययेश के साथ हो तो जातक राजनीति में नेतागिरी में रुपया खर्च करेगा और वहीं से कमायेगा भी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। दशम भाव में चंद्रमा उच्च का होगा एवं 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। दशम भाव में बैठे दोनों शुभ ग्रह धन स्थान, चतुर्थ भाव एवं षष्ट भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: जातक को 24 वर्ष की आयु के बाद धन प्राप्ति होनी शुरू होगी। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ होगा एवं 38 वर्ष की आयु के बाद दो मंजिला मकान बनायेगा, अच्छा वाहन खरीदेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–शुक्र के कारण 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक राजा या राजा से कम नहीं होगा।
6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि दशम स्थान में व्ययेश के साथ हो तो पत्नी या गुप्त रोग को लेकर रुपया खर्च होगा।
7. **चंद्र+राहु**–यहां चंद्रमा के साथ राहु होने से जातक विलासिता में भटक जायेगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु होने से जातक को राजनैतिक परेशानियां रहेंगी।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में

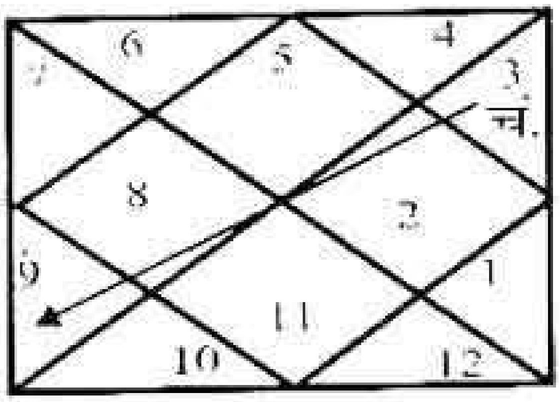

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां एकादश स्थान में चंद्रमा मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक को नौकरी-व्यापार का सुख प्राप्त होगा। जातक को स्त्री-सम्पति का सुख भी पूर्ण मिलेगा। उद्योग व बड़े व्यापार में जातक को अल्प धन लाभ होगा। जातक का मन विचलित रहेगा। जातक के निर्णय दोहरे मापदण्ड वाले होंगे।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक का बौद्धिक स्तर बढ़ा-चढ़ा होगा। जातक का संतान सुख उत्तम मिलेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति ग्यारहवें स्थान में होने से जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सुबह 10 से 12 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा के शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से व्यापार में लाभ होगा। जातक धनी होगा, पर धन संग्रह में बाधा बनी रहेगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में मिथुन राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कन्या राशि), पंचम भाव (धनु राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक स्थिति प्रथम संतति के बाद सुदृढ़ होगी।
3. **चंद्र+बुध**–बलवान धनेश के साथ व्ययेश के लाभ स्थान में होने से जातक अपने सामर्थ्य से अधिक बढ़-चढ़ कर खर्चे करेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के एकादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। एकादश भाव में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: आपका

पराक्रम बढ़ा-चढ़ा रहेगा। आपकी विद्या पूर्ण होगी। आपको शैक्षणिक डिग्री मिलेगी पर नम्बरों में कुछ न्यूनता अनुभव करेंगे। ससुराल अच्छा मिलेगा। जातक को सुन्दर पत्नी मिलेगी। प्रथम संतति के बाद जातक के भाग्योदय की गति में तेजी आयेगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र लाभ स्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ होने से व्यापार में लाभ तो होगा पर उसका बड़ा हिस्सा व्यर्थ में खर्च हो जायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि के लाभ स्थान में व्ययेश के साथ होने से जातक का चलता उद्योग एक बार बंद होगा।
7. **चंद्र+राहु**—राहु के साथ व्ययेश चंद्रमा के लाभ स्थान में होने से व्यापार में लगातार हानि होगी।
8. **चंद्र+केतु**—व्ययेश चंद्र के साथ केतु व्यापार प्रतिष्ठान में चोरी का संकेत देता है।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

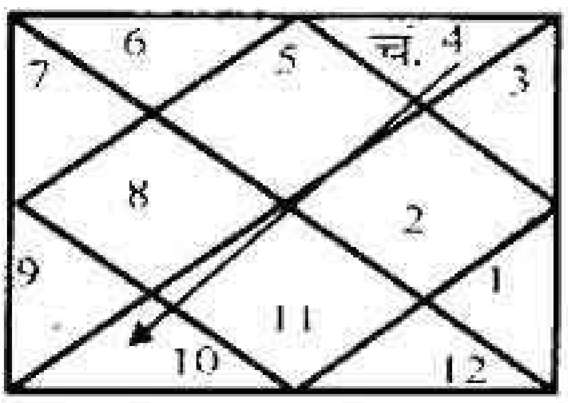

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां द्वादश स्थान में चंद्रमा स्वगृही कर्क राशि में होगा। व्यय भाव में व्ययेश के स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होगी। ऐसे जातक कल्पनाशील एवं संवेदनशील होते हैं। ऐसे जातक को यात्राओं से लाभ होता है। खासकर विदेश यात्रा से फायदा है। ऐसे जातक को रत्न-व्यवसाय अथवा आयात-निर्यात के कार्यों में लाभ होता है। जातक ऐश्वर्यवान एवं धनी होगा।

दृष्टि—व्यय भावगत चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—ऐसा जातक परद्वेषी होता है तथा वह दूसरों का सुख नहीं देख सकता।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति की ओर आगे बढ़ेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति द्वादश स्थान में होने से जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होता है। व्ययेश

चंद्रमा व्यय भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। लग्नेश बारहवें होने से 'लग्नभंग योग' बना। जातक को नेत्रपीड़ा रहेगी। जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा पर जन्म स्थान से दूर प्रदेशों में भाग्योदय होने का योग है।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वादश स्थान में कर्क राशि में चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। यद्यपि मंगल के कारण 'सुखभंग योग' तथा 'भाग्यभंग योग' बना था। तथापि व्यय भाव में व्ययेश स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग के कारण मंगल के अशुभ फल नष्ट हो जावेंगे। यहां 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (कुम्भ राशि) को देखेंगे। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। जातक शत्रुओं का दमन करने में कामयाब होगा, परन्तु जातक सही अर्थों में धनी विवाह के बाद होगा।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ धनेश बुध के शत्रुक्षेत्री होने से जातक धनी तो होगा पर धनभंग योग के कारण जातक की चल सम्पत्ति खर्च होती चली जायेगी।

4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। द्वादश स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं गुरु उच्च का होकर 'किम्बहुना योग' बनायेगा। साथ ही गुरु बारहवें होने से 'संतानहीन योग' की सृष्टि भी होगी। शुभ, अशुभ मिश्रित फलों से युक्त होकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: जातक को जीवन में बहुत ही उत्तम श्रेणी का मकान सुख एवं वाहन सुख मिलेगा। जातक की आयु दीर्घ होगी। जातक रोग व शत्रु दोनों का नाश करने में सक्षम होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र व्यय भाव में चंद्रमा के साथ होने से जातक का पराक्रम भंग करायेगा।

6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि बारहवें चंद्रमा के साथ विवाह में भंग एवं गृहस्थ सुख में बाधा पहुंचायेगा।

7. **चंद्र+राहु**–राहु के साथ व्यय भाव में चंद्रमा होने से जातक को खराब सपने आयेंगे। जातक विक्षिप्त भी हो सकता है।

8. **चंद्र+केतु**–केतु के साथ व्यय भाव में चंद्रमा मानसिक कष्ट देता है।

❑❑❑

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में

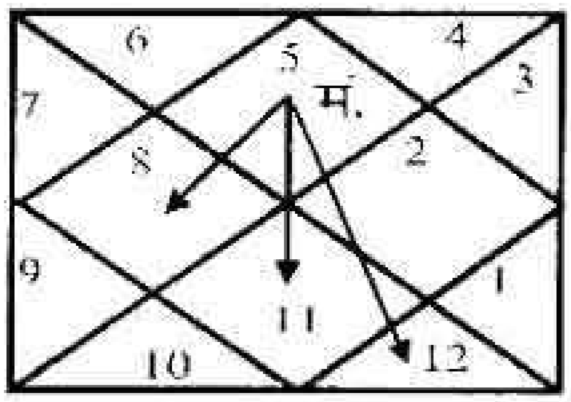

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों का स्वामी है। लग्नस्थ मंगल सिंह (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक रौबीले व्यक्तित्व वाला, हटी, कामी एवं क्रोधी होता है। इनमें प्राय: धैर्य की कमी रहती है। जातक को क्रोध जितनी तेजी से आता है, उतनी शीघ्रता से चला जाता है। ये लोग हृदय से शुद्ध, सच्चे व सत्यवादी होते हैं तथा कड़वी बात मुंह पर करने में संकोच नहीं करते। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती हैं।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि), सप्तम भाव (कुंभ राशि) एवं अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक को भूमि लाभ होगा। जातक की आयु में वृद्धि होगी तथा उसे गृहस्थ सुख विलम्ब से मिलेगा। जीवन साथी एवं भागीदार से नोक-झोंक होती रहेगी।

निशानी–ऐसे जातक प्राय: फौज, पुलिस, प्रशासनिक कार्य, तकनीकी कार्य, इंजीनियरिंग, ठेकेदारी इत्यादि कार्यों में सफल होते हैं।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी। जातक को भूमि लाभ होगा, वाहन सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–'रविकृत योग' के कारण ऐसा जातक अत्यधिक धनी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां प्रथम स्थान सिंह राशि में दोनों ग्रह स्थित होकर चतुर्थ स्थान (वृश्चिक राशि), सप्तम स्थान (कुम्भ राशि) एवं अष्टम स्थान (मीन राशि)

को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अपने घर (वृश्चिक राशि) को देखने के कारण जातक को घर का मकान, वाहन सुख इत्यादि की प्राप्ति होगी पर जातक की उन्नति विवाह के पश्चात् होगी।

3. **मंगल+बुध**–ऐसा जातक अत्यधिक धनी एवं पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु लग्न में यदि मंगल के साथ होगा तो जातक को गृहस्थी व संतान का पूर्ण सुख मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र लग्न में मंगल के साथ हो तो जातक को राजनीति में ऊंचा पद दिलायेगा।
6. **मंगल+शनि**–षष्टेश शनि लग्न में मंगल के साथ होने से जातक को जिद के कारण अपकीर्ति दिलायेगा।
7. **मंगल+राहु**–लग्न में राहु मंगल के साथ होने से जातक को निरंकुश नेता बनायेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु लग्न में जातक को यशस्वी बनायेगा, पर जातक लड़ाकू स्वभाव का स्वामी होगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में

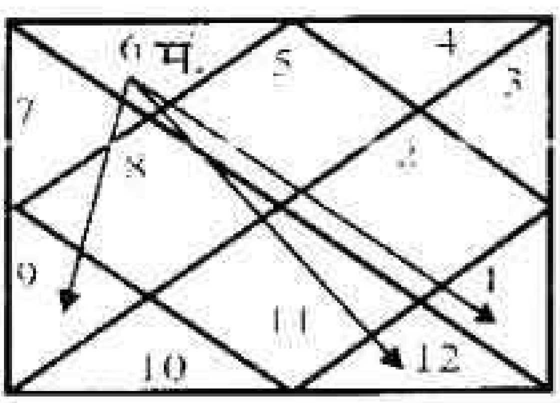

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एव त्रिकोण दोनों का स्वामी है। यहां द्वितीयस्थ मंगल कन्या (शत्रु) राशि में होगा। द्वितीय भाव में मंगल प्राय: विद्या और संतान सुख में बाधक होता है फिर भी जातक को स्थाई सम्पत्ति, जमीन-जायदाद, कुटुम्ब, स्त्री एवं संतान का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं अपने ही घर मेष राशि (नवम भाव) पर होगी। फलत: जातक को पुत्र संतति होगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा। जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।